|| मराठी-हिंदी मधील पहिले इ- मासिक *हिंदी-मराठी की पहली इ- पत्रिका ||

ज्योतिष

अंकशास्त्र

वास्तुशास्त्र

टैरो

धर्मशास्त्र

शंका समाधान

रत्नशास्त्र

सामुद्रिक शास्त्र

Visit- www.jyotishjagat.com

|| वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योति:शास्त्रमनुत्तमम् ||

|| मराठी-हिंदी मधील पहिले इ- मासिक *हिंदी-मराठी की पहली इ- पत्रिका ||

वर्ष -१ अंक -१ जानेवारी २०१८

हिंदी विभाग

English section

* Disclaimer – The opinion expressed in each article is the opinion of its author & does not necessarily reflect the opinion of Jyotish Jagat.

मराठी विभाग

* Disclaimer – The opinion expressed in each article is the opinion of its author & does not necessarily reflect the opinion of Jyotish Jagat.

गणेश- एक कुशल प्रशासक

आत्मरूप गणेशु केलिया स्मरण ।

सकळ विद्यांचे अधिकरण ।

तेचि वंदू श्रीचरण । श्री गुरुचे ।।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार मानव का शरीर पांच तत्त्वों से निर्मित है और इन तत्त्वों के पाँच अधिदेव माने गए हैं-आकाश तत्त्व के शिव देवता, जल तत्व के लिए श्री विष्णू, वायु तत्त्व के भगवती(देवी) देवता, अग्नि के सूर्य देव और पृथ्वी तत्त्व के श्री गणेश देवता हैं। इसी को हम पंचायतन कहते है। गणेश जी की विचित्र आकृति के आध्यात्मिक संकेतों के रहस्य को यदि भौतिक जगत के समरूप रख कर समझने का प्रयास करें तो स्पष्ट होगा कि सनातन लाभ प्राप्त करने के लिए गणेश अर्थात् शिव पुत्र अर्थात शिवत्व प्राप्त करना होगा अन्यथा क्षेम एवं लाभ (भगवान गणेश के दो पुत्र) की कामना सफल नहीं होगी। गजानन गणेश की व्याख्या करें तो ज्ञात होगा कि 'गज' दो

व्यंजनों से बना है। 'ज' जन्म अथवा उद्गम का प्रतीक है तो 'ग' प्रतीक है गति और गंतव्य का। अर्थात् गज शब्द उत्पत्ति और अंत का संकेत देता है-जहाँ से आये हो वहीं जाओगे। जो जन्म है वही मृत्यु भी है। ब्रह्म और जगत के यथार्थ को बनाने वाला ही गजानन गणेश है।

गणपति आदिदेव हैं जिन्होंने हर युग में अलग अवतार लिया। उनकी शारीरिक संरचना में भी विशिष्ट व गहरा अर्थ निहित है। शिवमानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव (ॐ) कहा गया है। इस एकाक्षर ब्रह्म में ऊपर वाला भाग गणेश का मस्तक, नीचे का भाग उदर, चंद्रबिंदु लड्डू और मात्रा सूँड है।

संत ज्ञानेश्वर कहते है -

"अ"कार चरणयुगुल ! "उ"कार उदार विशाल ! "म"कार महामंडल ! मस्तकाकारे !!

हे तिन्ही एकवटले तेथ शब्दब्रम्ह कवळले ! ते मियां श्रीगुरु कृपा नमिलें ! आदिबीज !!

गणेश मे एक शासक या नेता के गुण -

गणेश जी को यदि गणपति अर्थात किसी राज्य का राजा मान कर विश्लेषण किया जाए तो किसी शासक के अच्छे लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगेंगे। गणेश जी गज मस्तक हैं अर्थात वह बुद्धि के देवता हैं। वे विवेकशील हैं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त कुशाग्र है। हाथी की भ्रांति उनकी प्रवृत्ति प्रेरणा का उद्गम स्थान धीर, गंभीर, शांत और स्थिर चेतना में है। हाथी की आंखें अपेक्षाकृत बहुत छोटी होती हैं और उन आँखों के भावों को समझ पाना बहुत कठिन होता है। शासक भी वही सफल होता है जिसके मनोभावों को पढ़ा और समझा न जा सके। आंखों के माध्यम से मन के भावों को समझना सुगम होता है। यदि शासक की आँखें छोटी होंगी तो उसके भावों को जान पाना उतना ही कठिन होगा। इस प्रकार अच्छा शासक वही होता है जो दूसरों के मन को तो अच्छी तरह से पढ़ ले परन्तु उसके मन को कोई न समझ सके।

गज मुख पर कान भी इस बात के प्रतीक हैं कि शासक जनता की बात को सुनने के लिए कान सदैव खुले रखें। यदि शासक जनता की ओर से अपने कान बंद कर लेगा तो वह कभी सफल नहीं हो सकेगा। शासक को हाथी की ही भांति शक्तिशाली एवं स्वाभिमानी होना चाहिए अपने एवं परिवार के पोषण के लिए शासक को न तो किसी पर निर्भर रहना चाहिए और न ही उसकी आय के स्रोत ज्ञात होने चाहिए। हाथी बिना झुके ही अपनी सूँड की सहायता से सब कुछ उठा कर अपना पोषण कर सकता है। शासक को किसी भी परिस्थिति में दूसरों के सामने झुकना नहीं चाहिए। गणेश जी को शुद्ध घी, गुड और गेहूँ के लड्डू बहुत प्रिय हैं। इसीलिए उन्हें मोदक प्रिय कहा जाता है। ये तीनों चीज़ें सात्विक एवं स्निग्ध हैं अर्थात उत्तम आहार हैं। सात्विक आहार बुद्धि में स्थिरता लाता है। उनका उदर बहुत लम्बा है। उसमें हर बात समा जाती है। शासक में हर बात का रहस्य बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए।

गणेश जी सात्विक देवता हैं उनके पैर छोटे हैं जो कर्मेन्द्रिय के सूचक हैं। पैर जो गुण के प्रतीक हैं जो शरीर के ऊपरी भाग, जो सत्व गुणों का प्रतीक है, के अधीन रहने चाहिए। चूहा उनका वाहन है। चूहा बहुत चंचल और बिना बात हानि करने वाला है। चूहा किसी बात की परवाह किए बिना किसी भी वस्तु को काट कर नष्ट कर सकता है। इसी प्रकार कुतर्क बुद्धि भी मन के सात्विक भाव को खंडित करने का प्रयास करती है। यह मानव के राग-द्वेष आदि मानसिक गुणों से भरे मन का प्रतीक है। चूहे जैसे चंचल मन पर बुद्दि की भारी शिला रखनी आवश्यक है। वश में रह कर ही अमंगलकारी तत्त्व को मंगलमय वाहन अथवा साधन बनाया जा सकता है।

गणेश जी की चार भुजाएँ चार प्रकार के भक्तों, चार प्रकार की सृष्टि, और चार पुरुषार्थों का ज्ञान कराती है। हाथों में धारण अस्त्रों में पाश राग का; अंकुश क्रोध का संकेत है। वरदहस्त कामनाओं की पूर्ति तथा अभय हस्त सम्पूर्ण सुरक्षा का सूचक है। उनके सूप-कर्ण होने का अर्थ कि वह अज्ञान की अवांछित धूल को उड़ाकर उन्हें ज्ञान दान देते हैं। माया को हटाकर ब्रह्म का साक्षात्कार कराते हैं। नाग का यज्ञोपवीत कुंडलिनी का संकेत है। शीश पर धारण चन्द्रमा अमृत का प्रतीक है। फिर भी गणेश चतुर्थी को चन्द्रमा के दर्शन करना वर्जित कहा गया है। इस संदर्भ में एक पौराणिक आख्यान इस प्रकार है कि-एक बार गणेश जी अपने मूषक पर सवार होकर ब्रह्मलोक से चन्द्र-लोक होते हुए मर्त्यलोक आ रहे थे। उनके स्थूलकाय शरीर,

गजमुख, मूषक वाहन इत्यादि की विचित्रताओं को देख कर चन्द्रमा हंस पड़े। उस हँसी के कारण गणेश जी क्रोधित हो उठे और उन्होंने चन्द्रमा को शाप दे दिया कि गणेश चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन करने वाले को कलंक लगेगा। इसी कारण स्वयं भगवान श्री कृष्ण पर मणि चुराने का कलंक लगा था।

गणेश जी को प्रथम लिपिकार माना जाता है उन्होंने ही देवताओं की प्रार्थना पर वेद व्यास जी द्वारा रचित महाभारत को लिपिबद्ध किया था। जैन एवं बौद्ध धर्मों में भी गणेश पूजा का विधान है। गणेश को हिन्दू संस्कृति में आदि देव भी माना गया है। अनंतकाल से अनेक नामों से गणेश दुख, भय, चिन्ता इत्यादि विघ्न के हरणकर्ता के रूप में पूजित होकर मानवों का संताप हरते रहे हैं। वर्तमान काल में स्वतंत्रता की रक्षा, राष्ट्रीय चेतना, भावनात्मक एकता और अखंडता की रक्षा के लिए गणेश जी की पूजा और गणेश चतुर्थी के पर्व का उत्साह पूर्वक मनाने का अपना विशेष महत्व है।

॥ श्रीगणेशस्तोत्र ॥

श्रीगणेशाय नमः। नारद उवाच।

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥ १॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरः प्रभुः ॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ ६॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८॥

॥ इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

महापर्व - मकर संक्रांति

आपल्या देशातील वेगवेगळ्या भागात मकर संक्रात ही वेगवेगळ्या पद्धतीने साजरी केली जाते. तसेच मकर संक्रांत वेगवेगळ्या प्रांतात वेगवेगळ्या नांवाने ओळखली जाते. गुजरात- राजस्थान मध्ये उत्तरायण, आसाम मध्ये मघ विहु किंवा भोगली बिहू तमिलनाडु मध्ये 'पोंगल', पंजाबात लोहडी, हरियाणा- हिमांचल प्रदेश मध्ये माघी. कश्मीर घाटी मध्ये शिशुर संक्रांत, दक्षिण भारतात उगादि इ. पण नांवे आणि पद्धत थोड्याफार फरकाने वेगळ्या असल्या तरी सूर्य पूजा हेच मुख्य ध्येय असते. उत्तरायणाची सुरवात म्हणजेच देवांचा दिवस सुरु होतो म्हणून या संक्रातीचे महत्व अधिक असते. इथून पुढे मंगल कार्यांची सुरुवात होते.

कोणताही ग्रह ज्यावेळी एका राशीतून दुसऱ्या राशीत प्रवेश करतो त्याला संक्रांति म्हणतात. रवि म्हणजेच सूर्य हा एका वर्षात १२ वेळा राशी बदलतो म्हणजेच एका वर्षात सूर्याच्या १२ संक्रांति होतात, त्यात मकर संक्रांति ही उत्तरायणाची सुरुवात असते म्हणून अत्यंत शुभ व महत्वाची मानण्यात येते.

सूर्याच्या १२ संक्राति अशा आहेत.
तूळ व मेष - **विषुव संक्रांति.**
कुंभ, वृश्चिक, वृषभ व सिंह - **विष्णुपद.**
धनु, कन्या, मिथुन, मीन - **षडशीति.**
कर्क संक्रांति- **दक्षिणायन**
मकर संक्रांति – **उत्तरायन**

सर्वच संक्रांतिकाल हे धार्मिक कार्यासाठी अतिशय शुभ मानले जातात.

मकर संक्रांत 2018 - या वर्षी रविवार दिनांक 14 जानेवारी 2018 रोजी मकर संक्रांत आहे. शके 1939 पौष कृष्ण १३, रविवारी दुपारी १ वाजून ४६ मिनिटांनी सूर्य मकर राशीत प्रवेश करतो.

संक्रांतिचा पुण्यकाल - 14 जानेवारी 2018 रविवारी दुपारी १ वाजून ४६ ते सूर्यास्तापर्यंत आहे.

या दिवसाचे कर्तव्य - तिलमिश्रित उदकाने स्नान, तिळाचे उटणे अंगास लावणे, तिलहोम, तिलतर्पण, तिलभक्षण व तिलदान असा सहा प्रकारे तिळाचा उपयोग केला असता सर्व पापांचा नाश होतो.

संक्रांति वर्णन

वणिज करणावर संक्रांत होत असल्याने उक्त असलेले वाहनादि प्रकार पुढील प्रमाणे –

वाहन म्हैस (रेडा) असून उपवाहन उंट आहे. श्याम वर्ण (निळे) वस्त्र परिधान केले आहे. हातात तोमर हे शस्त्र घेतले आहे. अळीताचा टिळा लावलेला आहे. वयाने वृद्ध (प्रगल्भा) असून बसली आहे. वासाकरिता रुई घेतले आहे. दही भक्षण करीत आहे. मृग (हरिण) जाति आहे. भूषणार्थ निल रत्न धारण केले आहे. वारनांव घोरा असून नाक्षत्रनांव देखील राक्षसी आहे. सामुदाय मुहूर्त 30 आहेत. उत्तरेकडून दक्षिणेस जात आहे व पूर्व दिशेकडे मुख असून नैऋत्य दिशेस पाहत आहे.

संक्रांतिच्या पर्वकाळात पुढील कामे करू नये-

कठोर बोलणे, दात घासणे. *(इथे दांत घासु नये याचा अर्थ झाडाच्या काठीने दांत घासु नये असा घ्यावा , बोटाने घासणे, चूल भरने अथवा ब्रश करने चालते.)
वृक्ष-गवत तोडणे, गाई-म्हशींची धार काढणे. कामविषय सेवन आदी कामे करू नयेत.

संक्रांति पर्वकालात स्त्रियांनी करावयाची दाने –

नवे भांडे , गाईला घास, अन्न, तिळपात्र, गूळ, तीळ, सोने, भूमि, गाय, वस्त्र, घोडा इत्यादि यथाशक्ति दाने करावीत.

संक्रांतिच्या दानाचा संकल्प - देशकाल कथन करून - मम आत्मन: सकलपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं श्री सवितृ प्रीतीद्वारा सकलपापक्षयपूर्वकं स्थिर सौभाग्य कुलाभिवृद्धि धनधान्यसमृद्धि दीर्घायु:महैश्वर्य मंगलाभ्युदय सुखसंपदादि कल्पोक्तफल सिद्धये अस्मिन् मकरसंक्रमण पुण्यकाले

ब्राह्मणाय (अमुक) दानं करिष्ये । असा संकल्प करून दानवस्तूचे पूजन करून दान द्यावे. दक्षिणा द्यावी.

नक्षत्र परत्वे संक्रांति कोणा-कोणाला शुभाशुभ आहे.

ज्येष्ठा, मूळ, पूर्वाषाढा नक्षत्र असणाऱ्यांना -**प्रवास योग घडेल.**
उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र असणाऱ्यांना - **सुखभोग**
रेवती, अश्विनी, भरणी नक्षत्र असणाऱ्यांना - **शरीरपीडा**, आरोग्याची काळाजी घ्यावी.
कृत्तिका, रोहिणी, मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्र असणाऱ्यांना - **शुभ**, वस्त्र आभूषण प्राप्ति.
आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र असणाऱ्यांना - **द्रव्यनाश**, अर्थिक नुकसान.
उत्तरा फाल्गुनी , हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा नक्षत्र असणाऱ्यांना - **शुभ, धनप्राप्ति, यशप्राप्ति.**

ज्या नक्षत्रांना संक्रांति अशुभ आहे त्यांनी तिळमिश्रित पाण्याने स्नान, तिळाचे उटणे अंगास लावणे, तिलहोम, तिलतर्पन, तिलभक्षण व तिलदान या सहा अथवा यापैकी कोणतिही कामे संक्रांतिच्या पुण्यकालात करावी.

[**टिप** - दरवर्षी मकर संक्रांति संदर्भात ही संक्रांत अशुभ आहे अशा प्रकारच्या वेगवेगळ्या अफवा पसरविल्या जातात व लोकांना घाबरवण्याचा प्रयत्न केला जातो अशा प्रकारच्या गोष्टींना कोणताही शास्त्रीय आधार नसतो, त्यामुळे त्या अफवांवर लोकांनी विश्वास ठेवू नये.]

संक्रांतिच्या पर्व काळात पुजाअर्चा, दान, व्रत इ. चे पुण्य मिळतेच पण या काळात आपण आपल्या पत्रिकेतील बलहीन व अशुभ ग्रहांच्या संबंधित वस्तुंचे दान देऊन त्यांची अशुभताही कमी करू शकता. कोणत्या ग्रहासाठी कोणत्या वस्तु दान करू शकता ते पाहु.

सूर्य - माणिक रत्न, गहू, गाय, लाल वस्त्र, गूळ, सोने, तांबे, रक्तचंदन, कमळ यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

चंद्र - तांदूळ, कापूर, मोती, पांढरे वस्त्र, बैल, तूपाने भरलेला कुंभ यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

मंगळ - पोवळे, गहु, मसुर, लाल बैल, गूळ, सोने, लाल वस्त्र, तांबे यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

बुध - निळे वस्त्र, सोने, काशाचे भांडे, अख्खे मूग, पाचू रत्न, फुले यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

गुरु - पुष्कराग मणी, हळद, साखर, घोडा, पिवळे वस्त्र, मीठ, सोने यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

शुक्र - चित्रविचित्र वस्त्र, पांढरा घोडा, गाय, हिरा, सोने, रूपे, अत्तर, तांदूळ यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

शनि - नीलमणी, उडिद, तेल, तीळ, कुळीथ, म्हैस, लोखंड, काळ्या रंगाची गाय, चप्पल, घोंगडे, छत्री यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

राहु - गोमेदमणी, घोडा, निळे वस्त्र, तेल, कांबळे यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

केतू - वैडूर्य मणी (लसण्या), तेल, तीळ, कांबळे, कस्तुरी, मेंढा, वस्त्र यापैकी आपल्या सामर्थ्यानुसार गरजु व योग्य व्यक्तिला दान करावे.

[दान नेहमी सत्पात्र व्यक्तीलाच करावे. दान अशुभ व बलहीन ग्रहाचेच करावे.]

आपणा सर्वांना मकर संक्रांतीच्या हार्दिक शुभेच्छा |

|| तीळ-गुळ घ्या गोड गोड बोला.. ||

एक राशि से दूसरी राशि में किसी ग्रह का प्रवेश संक्रांति कहा जाता है। सूर्य का धनु राशि से मकर राशि म प्रवेश का नाम ही मकर संक्रांति है। हमारे देश में अलग-अलग भागोंमें मकर संक्रांति का त्यौहार अलग-अलग नाम से एवं रीतिरिवाजोंसे मनाया जाता है। कहीं इसे मकर संक्रांति कहते हैं, कही उगादी तो कहीं पोंगल लेकिन इस त्यौहार को मनाने के पीछे का उद्देश्य एक ही रहता है और वह है सूर्य की उपासना, तीर्थ स्नान और दान। संक्रांति के लगते ही सूर्य उत्तरायण हो जाता है जिसे देवताओं का सूर्योदय होता है और असुरोंका सूर्यास्त होने पर उनकी रात्रि प्रारंभ हो जाती है।

संक्रांति २०१८

संक्रांतिका पुण्यकाल - रविवार १४ जनवरी २०१८ को दोपहर १.४६ से लेकर सूर्यास्त तक है।

संक्रांतिके दिन क्या करे - तिल मिश्रित जल से स्नान, तिल का अंगराग, तिलोंसे होम, तिलोंसे तर्पण, तिल भक्षण और तिल दान इस तरह छे प्रकारसे इस दिन तिलोंका उपयोग करने से समस्त पापोंका नाश हो जाता है।

संक्रांति का स्वरुप -

संक्रांत वणिज करण और रविवार के दिन हो रही है तो वाहनादि प्रकार इस प्रकार है। वार नाम घोरा और नक्षत्र नाम राक्षसी है। बैठी हुयी है। उत्तर से दक्षिण दिशा की और जा रही है, पूर्व की और मुख है और नैऋत्य दिशा में देखा रही है। वाहन महिष और उपवाहन ऊंट है। फलस्वरूप महंगाई रहेगी और क्लेश रहेगा। श्याम वस्त्र पहना है, आयुध के तौर पे हैट में तोमर है। अगर का गंध लेपन लगाया है, उम्र में प्रगल्भा है। दुपहरिआ का पुष्प लिया है, वर्ण से विप्र है। नीलमणि धारण किया है। शूद्रों के लिए सुख।

मकर संक्रांति कुछ पौराणिक संदर्भ –

- इस दिन देवताओं के दिन की शुरुवात होती है और असुरोंकी रात्र शुरू हो जाती है।
- इस दिन भगवान सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाया करते हैं। शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अतः इस दिन को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है।

- मकर संक्रांति के दिन ही गंगाजी भागीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा उनसे मिली थीं। यह भी कहा जाता है कि गंगा को धरती पर लाने वाले महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए इस दिन तर्पण किया था। उनका तर्पण स्वीकार करने के बाद इस दिन गंगा समुद्र में जाकर मिल गई थीं। इसलिए मकर संक्रांति पर गंगा सागर में मेला लगता है।
- यशोदा जी ने जब कृष्ण जन्म के लिए व्रत किया था तब सूर्य देवता उत्तरायण काल में पदार्पण कर रहे थे और उस दिन मकर संक्रांति थी। कहा जाता है तभी से मकर संक्रांति व्रत का प्रचलन हुआ।
- इस दिन भगवान विष्णु ने असुरों का अंत कर युद्ध समाप्ति की घोषणा की थी व सभी असुरों के सिरों को मंदार पर्वत में दबा दिया था। इस प्रकार यह दिन बुराइयों और नकारात्मकता को खत्म करने का दिन भी माना जाता है।
- महाभारत काल के महान योद्धा भीष्म पितामह ने भी अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति का ही चयन किया था।

मकर संक्राति के दिन करे सूर्य उपासना

ज्योतिष के अनुसार मकर संक्रांति के दिन सूर्य की पूजा उपासना करना परम पुण्यदायक माना जाता है। ग्रहों में सूर्य को राजा का पद प्राप्त है इसलिए सूर्य की उपासना करना महत्वपूर्ण माना जाता है। सूर्य कृपा प्राप्त करने के लिए मकर संक्रांति पर किये जाने वाले प्रयोग कुछ .....

१) मकर संक्रांति के दिन सूर्य भगवान को अर्ध्य देकर आदित्य हृदय स्तोत्र के 108 पाठ किये जायें तो वर्ष भर शांति रहती है।

२) मकर संक्रांति के दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर नहा धोकर पवित्र होकर एक कलश में स्वच्छ जल भरकर उसमें थोड़ा सा गुड़, रोली लाल चंदन, अक्षत, लाल फूल डालकर दोनों हाथों को ऊंचा कर सूर्य भगवान को प्रणाम कर सूर्य मंत्र बोलते हुए अर्ध्य प्रदान करें। इसके पश्चात् लाल रंग की वस्तुओं का दान, तिल और गुड का दान करें तो आपको सूर्य देव की कृपा प्राप्त होने लगती है।

३) मकर संक्रांति के दिन प्रातःकाल नहा धोकर पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठकर भगवान सूर्य की पूजा करे। सूर्य देव की तस्वीर या यन्त्र को पंचामृत स्नान, धूप, दीप जलाकर लाल रंग के पुष्प फल अर्पित कर लाल रंग की मिठाई अथवा गुड़ का भोग लगायें। सूर्य मंत्र का ७००० जप करें। इससे आपको सूर्य देव की कृपा साल भर तक प्राप्त होती रहेगी।

आप भी मकर संक्रांति के दिन सूर्योपासना का लाभ अवश्य उठायें।

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर पूजा, दान, व्रत द्वारा आप सिर्फ पुण्य ही नहीं कमायेंगे बल्कि आप अपनी कुंडली के कमजोर ग्रहों के अशुभ प्रभाव को भी दूर कर सकते हैं। इसके लिए विशेष रूप से कुण्डली के अशुभ एवं कमजोर ग्रहों से संबंधित दान अवश्य करें। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर ग्रहों के अनुसार दान कर आप अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकते हैं तथा सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सूर्य ग्रह से संबंधित माणिक्य, गेहूं, स्वर्ण, तांबा, बर्तन, गुड़, गाय, लाल वस्त्र, लाल फूल, लाल चंदन, कमल का फूल आदि वस्तुओं का दान अपनी सामर्थ्यानुसार कर सकते हैं। यह दान किसी पुजारी या ब्राह्मण या गरीब व्यक्ति को ही देना चाहिए।

चंद्र ग्रह से संबंधित चांदी की वस्तुएं, मोती, चावल, दूध, बांस की टोकरी, शंख, कपूर, सफेद कपड़ा, जल, दूध, घी, चावल की खीर आदि वस्तुएं सामर्थ्यानुसार किसी महिला को दान कर सकते हैं ।

मंगल ग्रह से संबंधित मसूर की दाल, लाल कपड़ा, गेंहू, सोना, तांबा की वस्तुएं, लाल चंदन, मूंगा, गुड़, लाल बैल, भूमि, मीठी रोटी सामर्थ्यानुसार किसी ब्राह्मण या गरीब व्यक्ति को दान किया जा सकता है।

बुध ग्रह से संबंधित वस्तुएं साबूत मुंग , स्वर्ण, हरा वस्त्र, पन्ना, कस्तूरी, हरी घास, हरी सब्जियां आदि का दान किसी ब्राह्मण या गरीब व्यक्ति को कर सकते हैं। हरे रंग की चूडी और वस्त्र का दान किन्नरों को देना भी शुभ होता है।

बृहस्पति ग्रह से संबंधित वस्तुएं पीली मिठाइयां, चीनी, केला, हल्दी, पीला धान्य, पीला कपड़ा, पुखराज, नमक, स्वर्ण, चने की दाल, घोड़ा, शहद, केसर, चांदी, शक्कर आदि किसी ब्राह्मण, पुरोहित या गुरू को दिया जा सकता है।

शुक्र ग्रह से संबंधित वस्तुएं सफेद रेषमी कपड़ा, चावल, दही, घी, सफेद घोड़ा, गाय-बछड़ा, हीरा, इत्र, कपूर, शक्कर, मिश्री, श्रृंगार का सामान, चांदी, जरकिन स्टोन आदि अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्त्री को दान कर सकते हैं।

शनि ग्रह से संबंधित काली उड़द, तेल, काले वस्त्र, लोहे की वस्तुएं तथा बर्तन, काला तिल, कंबल, जूता, नीलम, चांदी आदि वस्तुएं किसी गरीब वृद्ध व्यक्ति को दान करें।

राहु ग्रह से संबंधित वस्तुएं काले-नीले फूल, कोयला, गेहूं, नीला वस्त्र, कम्बल, गोमेद, उड़द, तेल, लोहा, अभ्रक, मदिरा आदि सायंकाल किसी गरीब व्यक्ति को दान दें।

केतु ग्रह से संबंधित काला फूल, चाकू, लोहा, छतरी, सीसा, लहसुनिया, तिल, दुरंगा कंबल, कपिला गाय, बकरा, नारियल, कस्तूरी आदि वस्तुएं दान की जा सकती हैं।

* दान देते समय जिस व्यक्ति को दान दिया जा रहा है उसका भी ध्यान रखें क्योंकि दान का फल तभी उत्तम होता है जबकि यह शुभ समय में किसी सुपात्र को दिया जाता है।

|| ज्योतिष जगत परिवार की ओर से हमारे सभी पाठकों को मकर संक्रांति की शुभकामनाएं ||

लेख आमंत्रित है।

नमस्कार,

आपका स्वागत है। हमारा उद्येश यहि है एक ही जगह पे सभी विषयोंका ज्ञान, लेख लोग पड सके। इससे पाठकों के लिए जादा और अच्छे विकल्प तथा विविधता मिलेंगी। साथही लेखकोंके लिए व्यापक पाठक गणोंतक पोहंचनेका अवसर मिलेगा। हम मासिक पत्रिका / वेबसाईट के रुपमे एक मंच तय्यार कर रहे है जहां पे लेखक और पाठक दोनोंको एकसाथ लाया जा सके। इन विषयोंका आपका ज्ञान, अनुभव, प्रतिभा लोगोंके सामने रखनेका इससे बेहतर माध्यम शायदही आपको कही और मिले।

ज्योतिष (सभी शाखाए), वास्तुशास्त्र, अंकशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, डाऊजिंग, रमल, टॅरो, रेकी, अध्यात्म, धर्म, संस्कृती, आयुर्वेद इ. विषयोंपे अगर आप लेख (हिंदि/मराठी/English) लिख सकते है तो आपका स्वागत है। आपके इन विषयोंपे लिखे लेख हम अपनी मासिक पत्रिका साथ ही वेब साईट के जरीए जादा से ज्यादा पाठकों तक पोहचा सकते है ओ भी आपके नाम और फोटो सहीत। अगर आप के पास इन विषयों का ज्ञान हो, अभ्यास हो, अनुभव हो और उसे शब्दोंमे लिखनेकी प्रतिभा हो तो आपके लेख हमे भेज दे। अपना ज्ञान, अपना हुनर लोगोंके सामने लाए। या आप वेबसाइट पर अपने लेख अपलोड भी कर सकते हैं।

* शर्त और नियम - हमारे पास भेजे गये लेख किसी और सोशल मिडीया पे ना लिखे। अगर चाहे तो इसकी लिंक शेअर कर सकते है। लेख खुद का लिखा होना चाहिए, किसी और का अपने लिखा ना हो।

अगर आपका लिखा लेख किसी किताब, ग्रंथ, Blog या website का हिस्सा हो तो संदर्भ (Reference) के तौर पे उसका नाम और लेखक का नाम जरुर लिखे। इसी तरह अगर आपका लेख किसी और भाषा से भाषांतरीत है तो भी सन्दर्भ दे।

अपना लेख MS word File में (जरुरीहो तो image इस्तेमाल कर) निचे दिए गये Email पे भेज दे। ।

धन्यवाद !

ज्योतिष जगत

Mail us - articles.jyotishjagat@gmail.com

Or Upload on

www.jyotishjagat.com

अपराध – सेवापराध

मंदिरात जाताना, देवदर्शन घेताना आपला व्यवहार कसा असावा, आपण कसे वागावे याविषयी आपल्या शास्त्रात बरेच निर्देश देण्यात आले आहेत. पद्मपुराणात बत्तीस (३२) सेवापराध सांगितले आहेत. मंदिरात अथवा देवदर्शन घेताना काय करु नये हे यात सांगितले आहे. या ३२ गोष्टी केल्याने देवदर्शनाचे पुण्य तर मिळत नाही पण उलट अपराध केल्याचा दोष मात्र लागतो, म्हणून धर्मिक वृत्तीच्या प्रत्येकांने मंदिरात जाताना अथवा देवदर्शन घेताना या ३२ गोष्टी टाळाव्यात.

१ – मंदिरात वाहन (चप्पल बूट ई) घालून जाणे अथवा वाहनावर बसून जाणे.
२ – देवांसंबंधीत उत्सव साजरे न करणे अथवा उत्सवात सामिल न होणे.
३ – देवासमोर जाऊन देवाला नमस्कार न करणे.
४ – अशुद्ध किंवा अपवित्र अवस्थेत देवदर्शन घेणे.
५ – देवाला एका हाताने नमस्कार करणे.
६ – (*प्रदक्षणेला जागा असताना) देवासमोरच एका जागीच प्रदक्षणा करणे.
७ – देवासमोर पाय पसरुन बसणे.
८ – देवासमोर खाटेवर अथवा पलंगावर बसणे.
९ – देवासमोर झोपणे.
१० – देवासमोर जेवण करणे.
११ – देवासमोर खोटे बोलणे. (इतर वेळीही खोटे बोलणे हे टाळावेच).
१२ – देवासमोर जोरात, मोठ्या आवाजात बोलणे.
१३ – देवासमोर परस्पर गप्प मारणे.
१४ – देवासमोर रडणे, अश्रू ढाळाणे.
१५ – देवासमोर इतरांशी भांडणे.
१६ – देवासमोर इतरांना शिक्षा देणे, अथवा शासन करणे.
१७ – देवासमोर दुसऱ्यांवर अनुग्रह (दया, कृपा) करणे.
१८ – देवासमोर स्त्रियांवर रागावणे अथवा स्त्रियांप्रती वाईट बोलणे.
१९ – देवासमोर अंगावर कंबल अथवा चादर ओढून घेणे.
२० – देवासमोर दुसऱ्यांची निंदा करणे.
२१ – देवासमोर दुसऱ्यांची स्तुती करणे.
२२ – देवासमोर अपशब्द बोलणे.
२३ – देवासमोर अधोवायुचा त्याग करणे.
२४ – ऐपत असतानाही गौण उपचारांनी देवाची पुजा करणे.
२५ – देवाला नैवेद्य (भोग लावणे) दाखविल्याशिवाय खाणे.
२६ – नविन ऋतूतील येणारे फळ (सिजनल फळ) देवाला अर्पण केल्याशिवाय खाणे.
२७ – वापरलेले अथवा वापर करून उरलेल्यातील वस्तू देवाला अर्पण करणे.
२८ – देवाकडे पाठ करुन बसणे.
२९ – देवासमोर दुसऱ्यांना नमस्कार करणे.
३० – गुरुंचा अनादर करणे, गुरुंची स्तुती न करणे.
३१ – स्वत:च स्वत:ची स्तुती करणे.
३२ – कोणत्याही देवांची निंदा करणे.

वरवर पाहता या गोष्टी केवळ एक प्रकारचा निर्देश आहेत असे वाटतात पण नीट समजून घेतल्या, जरा विचार केला तर लक्षात येते की या मागे शास्त्रकारांना काय सांगायचे आहे. मंदिरात जाताना आपली मानसिक व शारिरीक स्थिती कशी असावी याविषयी यातून मार्गदर्शन मिळते. क्रोधीत अथवा खिन्न मनस्थितीत, घाई गडबडीत मंदिरात जाऊ नये. निवांत, प्रसन्न व उल्लासित मन असताना देवदर्शनासाठी मंदिरात जावे असे यातून लक्षात येते.

Introduction of Vedic Astrology

यथा शिखा मयुराणां नागांनां मणयो यथा !

तद्वत वेदांग शास्त्राणां ज्योतिषम मूर्धनि स्थितं !!

- वेदांग ज्योतिष

[Like the crest of peacock, like the gem stone in the head of cobra,
Astrology is the crown of the Vedic knowledge branches]

What is Astrology?

Astrology defines as the study of the motions and positions of celestial bodies interpreted as having an influence on human affairs and the natural world.

The term Astrology comes from two Greek words 'astron', a star or constellation of stars, and 'logus' means study. So Astrology means study or discourse on the influence of the stars. In India known as "Jyotish Shastra" means science or study of stars. So we called Astrology is the science that explores the action of celestial bodies upon animate and inanimate objects, and their reactions to such influences. Astrology is a mother of Astronomy. In ancient ages astrology and astronomy were twin sciences, and astronomy was studied only for astrologers to make astrological predictions. Astronomy may be termed an 'objective' science, while Astrology must be 'subjective' science. The charting of the horoscope is an astronomical process, and the judgment or interpretation of the horoscope is an astrological process.

Astrology also deals with angles between the planets and their observed effect upon humanity. The signs are a way of dividing the heavens; so are the houses, but they are based upon the place of birth. The signs may be considered the field of action; the house is the place where the action occurs, and the planet is the motivating power of force. Astrology teach as that there is harmony and similarities in the universe and that everyone is part of the whole. So we should try to understand astrology as a philosophy which helps to explain life. The purpose of astrology is not to blame the planets for what happens to us, but, on the contrary, to learn about ourselves by planetary indication. When we see ourselves clearly we can discover within ourselves new qualities and then our life become more fulfilled, purposeful and productive.

Skandha (branches) of Astrology

सिद्धांतसंहिता होरा रुपं स्कंधत्रयात्मकम् !
वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योति:शास्त्रमनुत्तमम् !!

- नारद संहिता

Astrology the pure eye od vadas, has three skanda(branch) namely Siddhant, samhita and hora.

Astrology (Jyotish shastra) is divided into three *skandhas* and six *angas*. The three skandhas are *Siddhant, Samhita and Hora*.

Siddhant **-** astrological/ astronomical calculations.

Samhita **-** various observations, including celestial omens, the weather, earthquakes, rain, economic cycle, the varying fortunes of the population at large, vastu, exploration of water springs ect.

Hora – interpretation of horoscopes.

जातकगोलनिमित्तप्रश्नमुहुर्ताख्यगणितनामानि !
अभिदधतीह षडङ्गान्याचार्या ज्योतिषे महाशास्त्रे !!

गोलो गणितं चेति द्वितयं खलु गणितसंज्ञिते स्कंधे !
होरासंहितयोरपि निमित्तमन्यत्त्रयं च होराख्ये !!

- प्रश्नमार्ग १- ६,७.

The great science of astrology is classified into six *angas*, Gola, Ganita, Jatak, Prasna, Muhurtha and Nimitta (Shakun).

Siddhant skandha deals with Gola and Ganita. Hora skandha deals with Horoscopy, Prasna, Muhurtha and a part of Nimitta. Samhita skandha deals elaborately with Nimitta.

Gola (गोल) – spherical astronomy and direct observations; observational astronomy.

Ganita (गणित) **-** astrological/ astronomical calculations.

Jataka (जातक) – natal astrology.

Prashna (प्रश्न) – horary astrology.

Muhurta (मुहूर्त) – choosing astrologically auspicious beginnings for any endeavor; electional astrology.

Nimitta (निमित्त) – interpreataion of omens; shakuna.

Styles of Astrology in India – in India various styles found for prediction and interpretation, like Parashari jyotish, Jaimini jyotish, Nadi jyotish, Krishnamurthi paddhati, Lal kitab ect.

****

हृदयविकार आणि सूर्योपासना

अलिकडे हृदयविकाराचे प्रमाण वाढत चालले आहे. प्रगत विज्ञानाचे जसे फायदे आहेत, तसे दुष्परिणामही आहेत. नैसर्गिक शारीरिक व्यायम कमी झाला आणि निकृष्ट प्रतीचा, अभक्ष्य आहार वाढला, तसेच युद्ध, प्रदुषण, मानसिक ताण, भिती, अस्थिरता वाढून परिणामत: हृदयविकार फोफावू लागला आहे. अमेरिकेत १०० पैकी ५४ मृत्यु हृदयविकाराचे असतात. तर भारतात मृत्युला कारणीभूत होणाऱ्या रोगांमध्ये सांसर्गिक व क्षय यानंतर हृदयविकाराचा तिसरा क्रमांक आहे. यावर आबालवृद्ध, गरीब-श्रीमंत, स्त्री-पुरुष कोणालाही करता येण्यासारखा सोपा उपाय म्हणजे सूर्योपासना होय. एकदा हा झटका आल्यानंतर तो सौम्य असो वा जोराचा असो त्यातून बरे वाटल्यानंतर त्यांना नेहमीच फार जपून रहावे लागते. सतत काहीतरी औषध घ्यावे लागते. इतके करुनही पुन: केंव्हा झटका येईल ते सांगता येत नाही व त्यामुळे सतत भीतीत आयुष्य कंठावे लागते. म्हणून मुळात झटका येऊ नये अथवा पुन: पुन: येऊन त्रास देऊ नये म्हणून दैवी उपाय केला जातो.

सूर्यापासूनच माणसाचा जन्म असल्याने सूर्याचा व माणसाचा त्यातही सूर्याचा व हृदयाचा निकट संबंध असल्याने यावर सूर्योपासनेचा चांगला उपयोग होतो असा काही जणांचा अनुभव आहे. सूर्य हा जगताचा आत्मा आहे हे सर्व प्रसिद्ध आहे. सूर्यावर वादळ झाले म्हणजे पृथ्वीवर त्याचा परिणाम म्हणून काही जणांना हृदयविकाराचा झटका येतो असे अधुनिक वैज्ञानिकांचे प्रतिपादन आहे. सूर्याचा व आपल्या हृदयाचा निकटचा संबंध आहे हे जाणून वेदांपासून सर्व ऋषीमुनींनी सूर्योपासना श्रेष्ठ म्हणून सांगितली आहे. पूर्वी लहानपणापासून लोक नित्य सूर्यनमस्कार घालीत असत, गायत्री उपासना करीत असत. त्यामुळे हृदयरोगाचेही प्रमाण कमी होते. प्रसिद्ध हृदयरोग तज्ञ कै. डॉ. दाते आणि कै. डॉ. घरोटे यांनी "योग आणि तुमचे हृदय" (Yog And Your Heart) या पुस्तकात अनेक उपाय सांगितले असून सूर्यनमस्काराला प्राधान्य दिले आहे. पुरोगामित्वाच्या नांवाखाली अश्रद्धेने हे सर्व बंद झाले आणि त्याचे दुष्परिणाम आपण भोगत आहोत. सुदैवाने तो अश्रेद्धेचा काळ संपूण आता लोकांमध्ये पुन:श्रद्धा निर्माण होत आहे. लोकांची धर्माकडे प्रवृत्ती होऊ लागली आहे. पूर्वाचार्यांनी व गीतेनी श्रद्धेला अतिशय महत्व दिले आहे. या विकारवर पुढे दिलेले उपाय श्रद्धेने केल्यास त्याचे फल निश्चित दिसेल असा विश्वास आहे.

१)ऋग्वेदातील सौर सूक्तमंत्रानी पाणी अभिमंत्रित करुन ते प्राशन करावे. पाण्याऐवजी दूध अभिमंत्रित करणे अधिक चांगले. आपल्या हातामधील भांड्यात पाणी वा दूध घेऊन मंत्र म्हटले की ते पाणी वा दूध अभिमंत्रित होते. हा सर्वात उत्तम उपाय आहे पण तो सर्वानाच शक्य होईल असे नाही. कारण सौरसूक्त येणारी मंडळी फारच थोडी आहेत. वेदमंत्र असल्याने सहज कोणीही म्हणू शकेल असे नाही. वैदिक ब्राह्मणाकडुन त्या सूक्तानी अभिमंत्रित केलेले पाणी वा दुध रोज मिळवता आल्यास उत्तम.

२) सूर्यस्तोत्र, आदित्य हृदय स्तोत्र, आदित्य कवच, सूर्यमण्डल स्तोत्र, सूर्यस्तुती यापैकी एक रोज म्हणावे. यासाठी संस्कृत उच्चार चांगले करता आले पाहीजे. संस्कृत भाषेचा अभ्यास कमी झालेला असल्याने तेहि कठीण झाले आहे. पण प्रयत्न साध्य आहे.

३) हा विकार असलेला मनुष्य सूर्यनमस्कार घालू शकत नाही म्हणून बसून सूर्याचे ध्यान - ध्येय: सदा सवितृ मण्डल.... (खाली संपूर्ण दिला आहे.) हा श्लोक म्हणून मित्राय नम: इ. सूर्याची १३ नांवे (खाली दिलेली आहेत.) घेऊन प्रत्येक वेळी हात जोडून नमस्कार करावा. व अकाल मृत्यु हरणं....(खाली संपूर्ण दिला आहे.) हा श्लोक म्हणून तीर्थ घ्यावे. हे करणे सहज शक्य आहे.

४) जे सदृढ आहेत व ज्यांना अजून हृदय विकाराचा झटका आला नाही व भविष्यात येऊ नये असे वाटते त्यांनी वरील प्रकार बसून करण्याऐवजी सूर्यनस्कार घालून करावा.

सूर्याची नांवे (१३) -
१) ॐ मित्राय नम: २) ॐ रवये नम: ३)ॐ सूर्याय नम:
४) ॐ भानवे नम: ५) ॐ खगाय नम: ६)ॐ पूष्णे नम:
७) ॐ हिरण्यगर्भाय नम: ८) ॐ मरीचये नम: ९)ॐ आदित्याय नम:
१०) ॐ सवित्रे नम: ११) ॐ अर्काय नम: १२)ॐ भास्कराय नम:
१३)ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नम:

सूर्याच्या ध्यानाचा श्लोक -
ध्येय: सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायण:
सरसिजासनसन्निविष्ट:।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी
हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्र:॥

तीर्थाचा श्लोक -
आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मांतर सहत्रेषु दारिद्र्यनोपजायते॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनमं । सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥

हा विकार असलेल्या लोकांनी वरील उपाय करून आपले अनुभव कळवावेत म्हणजे पुढील वर्षी अधिक विश्वासाने व खात्रीपूर्वक लिहिता येईल.

साभार दाते पंचांग इ.स. १९८७-८८ शके – १९०९

****

लेख आमंत्रित आहेत.

नमस्कार ,

आपले स्वागत आहे. ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, अंकशास्त्र, डाऊजिंग, टॅरो, रेकी, रमल अध्यात्म, धर्म, संस्कृति, आयुर्वेद इ. व यासारख्या कोणत्याही विषयावर आपण लेख (मराठी/ हिंदी/ English यापैकी कोणत्याही भाषेत) लिहू शकत असाल तर तुमच्या लेखांचे स्वागत आहे, आम्ही ते तुमच्या नांव व फोटोसहीत आमच्या मासिक व वेबसाईट वरून प्रसिद्ध करु, जास्तीत जास्त लोकांपर्यंत पोहचवू. जर तुमच्याकडे वरील विषयावर ज्ञान असेल, अभ्यास असेल, अनुभव असेल व ते शब्दात मांडण्याची प्रतिभा असेल तर मग तुम्ही लेख लिहून आमच्या कडे पाठवा. अथवा आपले लेख वेबसाईट वर upload करू शकता.

अटी व नियम –

आपले लेख MS word File मध्ये (जरुरी असल्यास जरुरी त्या image वापरुन) खालिल Email वर पाठवून द्यावे.

आपण आमच्याकडे पाठवत असलेले लेख मात्र इतर कोठेही (फेसबुक अथवा इतर सोशल मीडियावर) प्रसिद्ध करू नये हवी असल्यास त्याची लिंक शेअर करावी.

लेख स्वतः लिहिलेले असावेत. इंटरनेट वरील कॉपी/पेस्ट पोष्ट चालणार नाहीत.

जर लेखातील काही भाग इतर ठिकाणाहून (पुस्तक अगर ब्लॉग) घेतला असल्यास संदर्भ म्हणून तसा त्याचा उल्लेख करावा. जर लेख पूर्ण भाषांतरीत असेल तर मूळ लेखाचा, लेखकाच्या नांवासहीत उल्लेख करावा.

धन्यवाद .

ज्योतिष जगत

Mail us - articles.jyotishjagat@gmail.com

Or Upload on

www.jyotishjagat.com

कुंडलीतील चंद्राचे महत्व

फलज्योतिष एक उत्तम शास्त्र आहे पण त्याची सत्यता फलज्योतिष सांगणाऱ्या ज्योतिषाच्या व्यासंगावर फारच अवलंबून आहे. याचे प्रमुख कारण इतर भौतिक शास्त्रातील ग्रंथावरून कोणासही शास्त्राची प्रचीती जितक्या स्पष्टपणे अनुभवता येते तशी ज्योतिषशास्त्र ग्रंथावरून चटकन अनुभवता येणार नाही. ज्योतिषशास्त्राची संपूर्ण तऱ्हेने व्यवस्थित बांधणी आपल्या मराठी वाङ्मयांत अजून तरी झालेली नाही. ग्रहांची स्थानगत, राशिगत फले, कारकत्व, ग्रहयोग ह्यापलीकडे आपले ग्रंथ अजून गेलेले नाहीत. फलज्योतिषशास्त्र हे इतके गुंतागुंतीचे आहे की त्याला शब्दरूपाने, ग्रंथरूपाने बद्ध करणे हे फारच अवघड आहे. त्यातून ग्रंथकाराच्या अभ्यासाची कुवत त्याच्या लिखाणात प्रतिबिंबित होते ह्या दृष्टीने मराठी ज्योतिष वाङ्मय पाहिले तर ते फारच निराशाजनक आहे.

फलज्योतिष तत्वे प्रत्यक्ष उदाहरणांची प्रचीती दाखवल्याशिवाय कळणे शक्य नाही. एका दृष्टीने वैद्यकीय शास्त्र व ज्योतिषशास्त्र ह्यांचे साम्य आहे. नुसते ग्रंथ वाचून कोणीही उत्तम डॉक्टर होऊ शकत नाही. अनेक केसेस त्याने प्रत्यक्ष पाहिलेल्या असतील तरच त्याला रोग निदान बरोबर होऊ शकेल.

ज्योतिषशास्त्रातील बरेचसे नियम अजून ग्रंथातूनसुद्धा स्पष्टपणे आलेले नाहीत कसे ते एकाच उदाहरणावरून विषद करतो. आपल्याकडे लग्नकुंडली बरोबरच सोबत राशी कुंडली मांडण्याची पद्धत आहे. ही पद्धत का झाली असावी ह्याचा विचार बहुतेक चंद्राला जास्त प्राधान्य असल्यामुळे, चंद्र मनाचा कारक असल्यामुळे, किंवा गोचर फळे चंद्राकडून पाहण्याचा प्रघात असल्यामुळे राशिकुंडली माडण्याची प्रथा असावी असे वाटत होते. अनेक ग्रंथातून चंद्र हा महत्वाचा ग्रह आहे असे सांगून त्याचे कारकत्व दिलेले आहे. माझ्याकडे एकदा शंका विचारायला आलेल्या विद्यार्थ्याने 'चंद्राला कुंडलीत फार महत्व आहे' म्हणजे काय ते समजावून सांगा असे मला म्हटल्यावर मी त्याला नाना तऱ्हेने चंद्राचे कारकत्व समजावून सांगितले तरी त्याचे समाधान झालेले दिसले नाही, म्हणून प्रत्यक्ष उदाहरणानेच त्याला पटवून दिले.
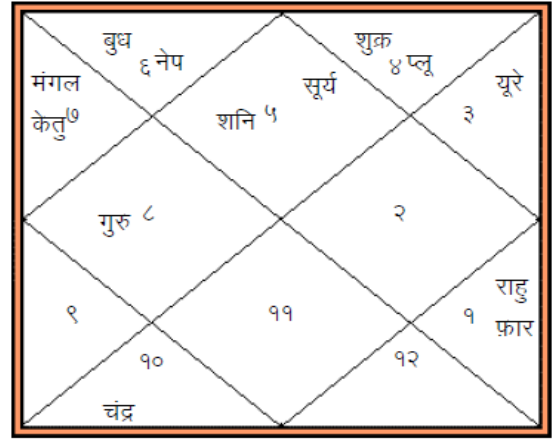
'अ' कुंडलीतील मुलाचा मृत्यु १९७३ साली वाहन अपघातात झाला आहे. वरील घटनेचे कारण त्या विद्यार्थ्याने अगदी अचूक सांगितले सिंह लग्नाचा मोठा अशुभ ग्रह शनि हा लग्नात आहे. रवि-शनि लग्नात असल्याने अल्पायू योग झाला. मी त्याला त्याची कारणमीमांसा अगदी बरोबर आहे असे सांगून पुढील कुंडली (ब) दाखवली.

'अ' कुंडली प्रमाणेच रवि- शनि लग्नात आहेत. मंगळ गुरूसुद्धा त्याच स्थानात आहेत. ग्रहांना स्थानागत, राशिगत, भावेशगत म्हणून जी काही फले आसतात ती दोनही (अ व ब) कुंडल्यात सारख्याच तऱ्हेने मिळावयास पाहिजेत, किंबहुना अशा तऱ्हेच्या सर्वच कुंडल्याना ते परिणाम सारखेच अनुभवास यावयास पाहिजेत.
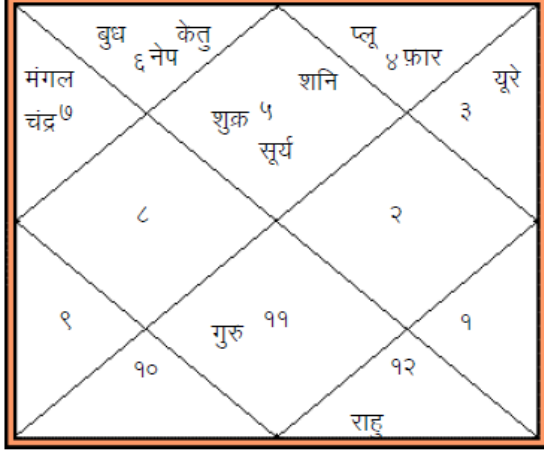
आता कुंडली 'क' पहा. 'क' कुंडलीत सुद्धा रवि-शनि लग्नातच असून मंगळ तृतियातच आहे, तेंव्हा 'अ' कुंडलीत रवि-शनि योगामुळे आयुष्यमान कमी हे विधान केले की, 'ब' व 'क' ह्यांना तसा अपघात झालेला नाही. तेंव्हा आता तिन्ही कुंडल्या चंद्राकडून मांडून पहा. राशिकुंडल्या त्या दृष्टीने जास्त बोलक्या आहेत. 'अ' कुंडलीत चंद्राच्या अष्टमात रवि-शनि आहे. 'ब' कुंडलीत तसे नाही. 'ब' कुंडलीत चंद्र उच्च राशीत, तर 'क' कुंडलीत शुक्र वर्गोत्तम आहे. (जास्त खोल कारणमीमांसा सोडून देऊ.)

वरील उदाहरणावरून एक गोष्ट स्पष्ट होते. ती म्हणजे आज एका लग्नावर जन्मलेल मूल, उद्या व परवा त्याच लग्नावर जन्मणारी मुले ह्यांचे जीवन सारखे नसणार, राशिकुंडली म्हणजे केवळ चंद्राच्या स्थितीवर त्याच्या जीवनात फार मोठे फरक पडणार. ग्रहांच्या स्थानागत, राशीगत, भावेशगत परस्पर योगांचा कितीही कथ्याकूट करूनही हा फरक स्पष्ट करता येणार नाही. तर केवळ चंद्रापासून सर्व परिस्थिती बदलते, म्हणून चंद्रालाच महत्व दिले पाहीजे.

चंद्राकडून होणरे योग हे किती मोठे परिणाम करतात हे माझ्याकडील आणखी दोन कुंडल्यांवरून मला समजू शकले. एका सुप्रसिद्ध मंत्री महाशायांची कुंडली व एका शाळामास्तरांची कुंडली फक्त चंद्र सोडल्यास बाकी सर्व ग्रहांच्या दृष्टीने सारखीच. दोघांच्या कुंडलीत शनि, हर्षल, गुरू मेषेचे एकाच स्थानात, मंगळ-शुक्र तुळेचे एकाच स्थानात, पण एकाची मेष रास तर शाळामास्तरांची धनू रास. आता मेष राशीकडून केन्द्रकोणाधिपती पाहा व धनु राशीकडूनही पहा. चर राशीतील ग्रह चर जन्मरास असल्याने जसे राजयोगकारक झाले तसे ते धनु राशिकडून झालेले नाहीत. सर्व प्रकारचे राजयोग अथवा इतर योग चंद्राकडूनही महत्वाचे व्हावे लागतात हे ह्या उदाहरणावरून कळून येईल.

राशिकुंडलीस इतके महत्व आहे हे सोदाहरण सिद्ध झाल्यावर ज्योतिषशास्त्रातील काही नियमांचे नव्या दृष्टीकोनातून मूल्यमापन होणे किती आवश्यक आहे हे कळून येईल. विवाह जूळणीत पाहिला जाणारा मंगळ, हा या दृष्टीने किती हस्यास्पद ठरतो. 'अ' मुलीच्या कुंडलीत सप्तमात मंगळ व 'ब' मुलीच्या कुंडलीतही सप्तमात मंगळ आहे पण 'ब' च्या कुंडलीत चंद्रच्या सप्तमात जर गुरू-शुक्र असतील तर ? त्या दोन्ही कुंडल्यांचे केवळ सप्तमातील मंगळ असे साम्य दाखवून एका मापाने त्या मोजताच येणार नाहीत. किंबहुना 'ब' कुंडली मंगळाची म्हणून ज्योतिषी नाकारत असेल तर अशा पंडितांची कीव करावीशी वाटेल.

राशीकुंडलीप्रमाणे पडणारे फरक पाहिले म्हणजे आपण पाहात असलेली लग्न कुंडली म्हणजे केवळ नाण्याची एकच बाजू हे कळून येईल .

साभार- श्री व. दा. भट
ग्रहांकित दिवाळी अंक १९७७

TAROT – A fascinating journey

By – Vrushali N.

Human lives always raise questions on different turns of life.
There are so many methods which helps us to seek answers. Astrology, Numerology, Dowsing, Palmistry, Face reading are some of the fields which provides the answers to these questions.
For me, the most interesting and fascinating tool is TAROT.

Tarot is the set of 78 cards. Each cards holds different picture. Each card carries special message, which serves as a guide in our journey.

TAROT serves us in different ways

1) It works as tool to seek answers to our questions

2) It works as a guide on the way of spirituality

♦ ABOUT THE HISTORY OF TAROT

History of Tarot is still a mystery. There are no specific evidences to prove when and where the Tarot originated.
Some of the beliefs say that Tarot originated in China and soon attracted the whole world. While some of them say it originated in Egypt.
Egyptians used the signs and symbols to preserve their secrets and pass the same safely to the future generations. These cards then were popularly known as Tarot cards.

♦ ABOUT THE TAROT READING

Tarot reading is special event.
This generally means seek answers to the questions.
Cards are the golden keys which unlocks the doors of our lives.
Tarot reading mainly consists of two aspects – Querent and the Reader
Querent is the one who wish to seek the answers to his questions
Reader is the one who answers the questions with the help of Tarot cards, who is called as Tarot reader.

Vrushali N.
Tarot Reader
Reiki Healer
9663454836
vrushalivs@gmail.com

♦ INTERESTING DEBATE

There's an interesting debate among the Tarot readers. Some of the readers believe that the question to be answered must be framed in a perfect manner. Each and every word of the question shows its impact on the answer.
Some of the readers say, no matter how the question is framed, Tarot always reveals the right answers.
Apart from these two beliefs there is one more interesting belief which says that no need to frame the question, just shuffle the cards and start reading. The cards always convey the messages essential for your journey of life.

♦ OW TAROT CARDS WORK

Tarot cards are the set of cards with different pictures and symbols. Each carries its own message. Each card is different from the other. But, if we study the entire set of 78 cards, it covers all the aspects of our life.
Here, the Intuition power of the reader plays a very important role.
Tarot acts as a bridge between our sub-conscious and conscious mind. This helps

to reveal the power of our sub-conscious mind which is hidden because of our conscious mind. The images and symbols on the cards speak to us. They convey the correct messages as and when required by the Querent.

- **TAROT – A TOOL FOR DIVINATION**

Tarot works as an excellent tool for divination. Tarot cards are used in meditation practice and thus help in the spiritual development. It directs the path of our life.

Tarot – does not control our fate but guides our journey.

WHO CAN BE A TAROT READER......?

I come across one question most often that who can become a Tarot reader...... Well... the answer to this question is answered in a simple way in many blogs. They say, it's very easy to become a Tarot reader. We find the series of steps explaining how to be an expert Tarot reader.

But the question here is not just how to become a Tarot reader but it's who can become a Tarot reader.

In simple words Tarot is explained as a pack of 78 cards with different pictures holding different meanings.

My personal experience is.... Tarot is not just a set of 78 cards. It's far more than what we define here.

It's the divine energy packed in 78 cards. It's not the wish of the person makes him a Tarot reader. It's the divine energy of the cards, selects its media and this arises a wish in that media (reader) to become a Tarot reader.

Tarot finds its own way in this universe. It's my personal experience. I was unaware of the word Tarot.

One day it happened so that one of friend while having general discussion spoke a word Tarot. It was on that day the word Tarot hit my subconscious mind.

On the very same day I went through few websites of Tarot.

Instead of the explanation of cards, the pictures attracted me more towards it.

And from that day my journey started and Tarot became the inevitable part of my life.

I would also like to say that once Tarot selects you as a reader, they won't leave you.

I started my journey with Tarot, but due to some other priorities it was not possible for me to spend sufficient time with my cards. Later I was away from my cards for not less than a year.

But as I said Tarot selects us, and so today I find myself again happy with my cards.

So I say the cards them self choose their readers. We have to be just grateful for the divine power.

How about the tarot cards

So dear friends we have already started our fascinating journey towards the world of Tarot. Our intuitions have brought us on this path. The divine power has chosen us as a part of this world of Tarot.

When we talk about the Tarot, the first thing appears before us is TAROT CARDS. Pack of Tarot cards is called as 'Tarot Deck'.

Tarot Deck is a pack of 78 cards, among which 22 are Major (Major Arcana) and 56 are Minor (Minor Arcana). (This will be explained in the coming articles)

There's a vast range and variety of Tarot Decks available for Readers. Each Deck has its own special significance. Some of them have very bright colours, while some have pleasing pictures. On the contrary some are also with minimum colours and light shades.

Decks vary in the size of cards, pictures, colours and price too. So for the beginners it's quite confusing that which Deck should be selected in the beginning. I suggest going for the basic Deck with simple pictures and which is easy to handle. I myself prefer Rider-Waite Deck for the beginners.

Once we are quite familiar with the cards we can go ahead for other decks.

Again the same question arises....which deck will help us on our way??If we go out for suggestions, we come across many different solutions. In one of the book I came across, it explained that deck should not be purchased but should be gifted to us by someone. Now, this means we will have to wait till someone gift us the Tarot Deck and later will have to compromise with whichever Deck comes in our hand.

Better to keep all this suggestions aside.

Here our best guide is our own "INTUITUION". Go to the shop and ask the keeper to show some loose sample cards if available. Spend few minutes with those cards. Go around and look at the pack of Decks. Keep your mind cool and you will find that your intuitions guiding you to select the Deck. The Deck which suits you will attract your attention. Just go ahead, pick it up and start your journey.

Never forget to express your gratitude to the divine power on each and every step of your journey.

*****

शंख और उसके कुछ चमत्कारिक उपाय

सुख, समृद्धि एवं सौभाग्यदायी दुर्लभ शंख भारतीय संस्कृति में शंख को मांगलिक चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया है। स्वर्ग के सुखों में अष्ट सिद्धियों व नव निधियों में शंख भी एक अमूल्य निधि माना गया है। पूजा के समय जो व्यक्ति शंखनाद करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।समृद्धि और आयु के वर्धन और दरिद्रता के शमन के साथ-साथ देवी-देवताओं के पूजन में, ज्योतिष और तांत्रिक साधनाओं में एवं शुभ कार्य के प्रारंभ में इसकी विशेष उपयोगिता बताई गई है।

शंख समुद्र मथंन के समय प्राप्त चैदह अनमोल रत्नों में से एक है। लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने के कारण इसे लक्ष्मी भ्राता भी कहा जाता है। यही कारण है कि जिस घर में शंख होता है वहां लक्ष्मी का वास होता है।

ध्वनि के प्रसारण में सूर्य की किरणें बाधा उत्पन्न करती हैं। इसलिए शंख ध्वनि का उपयुक्त समय प्रातः काल या सायंकाल माना गया है, जब सूर्य की किरणों का घनत्व कम होता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार शंख ध्वनि का वातावरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। शंख ध्वनि जहां तक पहुंचती है वहां तक के वातावरण में रहने वाले सभी किटाणु पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं। इस तरह के सभी जीवाणु व रोग वातावरण में लगातार शंख ध्वनि होते रहने से पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं।

शंख ध्वनि का श्रवण हकलाहट तथा बहरापन को दूर करता है। जो व्यक्ति नियमित रूप से शंख बजाता है, उसे श्वास रोग, अस्थमा तथा फेफड़ों के रोग में आराम मिलता है। शंख ध्वनि कई प्रकार के रोगों को दूर कर सकती है। नियमित रूप से की गई शंख ध्वनि हवा तथा वातावरण को शुद्ध रखती है। ऐसा मान्यता है कि जब शंख

बजाया जाता है तो यह पुण्य की पाप पर विजय का ऐलान करता है।

शंख की ध्वनि से उत्पन्न कंपन पृथ्वी की नकारात्मक व विध्वंसक शक्तियों को रोकने में समर्थ हो सकते है। जिओपथिक स्ट्रेस दूर करने के लिए ये एक उत्तम उपाय साबित हो सकता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार शंख में जल भरने के बाद मंदिर में रख देना चाहिए और फिर घर की सभी वस्तुओं पर छिड़क देना चाहिए। जिस तरह से किसी भी धातु के बर्तन में रखे हुए जल में उस धातु के गुण आ जाते हैं, उसी प्रकार शंख में रखे हुए जल में भी शंख के गुण आ जाते हैं। इस जल को मानव शरीर पर छिड़कने से संक्रामक रोग से उसकी रक्षा होती है और उसके जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

शंख बजाने से बजाने वाले के अंदर साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति, आशा व उत्साह जैसे गुणों का संचार होता है। केवल वादक में ही नहीं, उस वातावरण में रहने वाले अन्य लोगों में भी इन गुणों का संचार होता है। लोकश्रुति के अनुसार शंख की ध्वनि से पशुओं को घबराहट होने लगती है, जिससे पूजा स्थल में ईश्वर ध्यान में पुजारी को सर्प इत्यादि खतरनाक जीव बाधा नहीं पहुंचाते। ऐसी भी मान्यता है कि शंख ध्वनि से बुरी आत्माएं दूर भागती हैं।

शंख को बजाने से वातावरण की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त और सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। इससे आशा, आत्मबल, शक्ति व दृढ़ता बढ़ती है तथा भय दूर होता है। इसके अतिरिक्त श्रद्धा व विश्वास जागृत होता है तथा भाग्य और सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।

दक्षिणावर्ती शंख के उपयोग: दक्षिणावर्ती शंख से लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है - इसके बिना लक्ष्मी जी की आराधना पूजा सफल नहीं मानी जाती। दक्षिणावर्ती शंख से पितृ-तर्पण करने पर पितरों की शांति होती है। दक्षिणावर्ती शंख में जलभर कर गर्भवती स्त्री को सेवन कराने से संतान स्वस्थ व रोग मुक्त होती है। दक्षिणावर्ती शंख से शालिग्राम व स्फटिक श्री यंत्र को स्नान कराने से वैवाहिक जीवन सुखमय और लक्ष्मी का चिर स्थायी वास होता है। चंद्र ग्रह की प्रतिकूलता से होने वाले श्वास व हृदय रोगों की शांति के लिए दक्षिणावर्ती शंख की नित्य पूजा करें। दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना से वास्तु दोषों का निवारण होता है।

- संकलन - ज्योतिष जगत

Contact for **Advertisement** in

JyotishJagat , e- magazine as well as website.

REACH MORE PEOPLE WITH US......

Astrologer
Vastu consultant
Tarot reader /Class /Workshop
Dowser/ Class /Workshop
Ratna, Rudraksha, Yantra seller
Astro-Vastu book seller
Astro-Vastu Classes/Workshop
Palm reader
Numerologist
Paurohit/ Pandit

Mail us - articles.jyotishjagat@gmail.com Or Visit – www.jyotishjagat.com

Or feel free to call us @ +91 9148303050

राहुचा अतिरेकीपणा शोध व बोध

ग्रहांचे मंत्रीमंडळात 'राहु' हा ग्रह अतिरेकी समजला जातो. त्याचा परिणाम ग्रहण कालात व त्यापासून सुरु होतो. उदाहरण द्यावयाचे झाल्यास दंगे, धोपे, तणाव, मोर्चा व नंतर त्या नेत्याची महत्त्वाचे स्थानावर नियुक्ती असा प्रकार सध्या लोकशाहीत चालू आहे. त्याचप्रमाणे थोड्याफार फरकाने राहू केतूची नियुक्ती ग्रहांचे मंत्रीमंडळात झाली आहे. विंशोत्तरी महादशेत राहूची १८ वर्षे व केतूची ७ वर्षे हा मोठा कालखंड आहे. प्रत्येक कालांत काही शब्दांना महत्व प्राप्त होते. हल्ली कुंडली समोर आली की, इतर महत्वाचे योग व सुक्ष्म निरिक्षण न करता कालसर्पाची कुंडली आहे असे सांगितले जाते. माझ्या माहीतीनुसार कालसर्प हा शब्दप्रयोग 'मानवयुग' ह्या पुस्तकांत श्रीमती इंदुमती पंडीत ह्यांनी मांडला, पण ह्याचा उपयोग सुर्यग्रहण व राष्ट्रीय भविष्यांत (फलादेशात) जास्त होतो, व त्याचे फलीत आणि परिणाम पहावयास मिळतात.

प्राचीन भारतीय ज्योतिष्य शास्त्राचे एक वैशिष्ट्ये असे की, त्यांत थोडक्यात व संक्षिप्त स्वरुपांत ग्रहांच्या समुहाला विशेष नांवे देऊन त्यांचे शुभाशुभ परिणाम सुचीत केले आहेत. उदाहरणार्थ राजयोग, लक्ष्मीयोग, गजकेसरी योग, सुनफा, अनफा वगैरे 'कालसर्प' योग ह्याचा धसका लोकांनी 'मंगळ' कुंडली सारखा घेताला आहे, सुर्यमालात रविचंद्रादी ग्रहांना राहू केतू निस्तेज करतात म्हणुन ते इतरांपेक्षा प्रबळ असावेत असे सर्वसामान्यांना वाटते. परंतु पूर्वाचार्यांनी त्याला समतोल महत्व दिले आहे.

राहू विषयक आपल्या पुराणात एक कथा सांगितली जाते. सुर आणि असुर यांनी केलेल्या समुद्रमंथनातून चौदा रत्ने निघाली होती. शेवटी अमृत निघाले. देव आणि दैत्य यांच्यात अमृताचे प्राप्तीसाठी युध्द सुरु होण्याची चिन्हे दिसू लागताच श्री विष्णूंनी मोहीनीचे रुप घेऊन देव व दैत्य यांना ओळीने बसवून अमृतांचा कुंभ घेऊन वाटण्यास सुरवात केली. एका हातात 'अमृताचा कुंभ' व दुसऱ्या हातात 'मद्य' याप्रमाणें वाटतांना अमृत फक्त देवांनाच मिळावे अशी योजना केली आहे. ही क्लुप्ती राहुचे लक्षांत आली व त्याने मायवी रुप घेऊन सुर्य, चंद्र यांचेमध्ये बसून श्री विष्णूकडून थोडेफार अमृत मिळताच तोंडात टाकले. मध्ये बसलेला दैत्य आहे हे रविचंद्रंनी श्रीविष्णूस खुणेने कळविले. श्रीविष्णूंनी त्वरीत सुदर्श्न चक्रने राहूचा शिरच्छेद केला; पण तो पर्यंत 'अमृत' राहूचे शरीरांत प्रविष्ठ झाले

होते. सुदर्शन चक्राचे आघाताने राहूचे शीर व धड हे वेगळे झाले. 'अमृताचे' प्राभावामुळे ते दोन्ही शरीराचे भाग चिरंजीव झाले. तेव्हपासून राहू हा रवि व चंद्र या ग्रहांना गिळायचे प्रयत्न करतो. तो क्रम ग्रहण रुपाने दिसतो. ही कथा सांगावयाचा हेतू एवढाच की त्यावेळेच्या समस्येचा तो भाग आहे.

कुंडलीत राहू 'वाईटच' फले निर्माण करतो असे म्हणता येणार नाही. ज्या स्थानी तो असतो त्या स्थानांतील फलामध्ये कमतरता, विलंब, त्रास निर्माण करतो. राहूचे 'गुणदोष' आपणांस माहिती आहेतच. हा ग्रह आजोबांचा कारक आहे. म्हणून वाडवडीलांनी वाईट कृत्ये केली की पुढच्या 'तीन पिढ्यांना' त्रास होतो. "त्रिपीढी" या शब्दाचा अपभ्रंश "त्रिपींडी" असा आहे. हल्ली अशी फॅशन झाली आहे की जीवनांत थोडाफर त्रास झाला की, नागबली. त्रिपींडी या प्रकारचे विधी करावयास सांगितले जातात. यात असे दिसून येते की या तात्कालीक बाह्य विधीमुळे केवळ मनालाच समाधान प्राप्त होते कारण 'सकाम' उपासना (फलाच्या आशेने केलेल्या) पंचवीस टक्केच फलद्रूप होतात.

कुंडलीत धनस्थान व सप्तमस्थान ह्यांस पूर्वापार मारक स्थान म्हटलेले आहे. कनक आणि कांता यांचा 'मोह' सर्वांना असतो. ह्यांच्य प्राप्तसाठी प्रयत्न लागतो. स्वत:चे कर्तुत्वावर व श्रमावर पैसा मिळवावा व भौतीक सुखे उपभोगावी ही अपेक्षा असते तसेच दुसऱ्याची तळमळ, तळतळाट होऊ नये. पण प्रत्यक्ष व्यवहारांत या गोष्टी मिळाल्या म्हणून काही लोक अवैध, नींद्य कर्मे करतात. ' चोऱ्या, फसवाफसवी, विश्वासघात पैशासाठी खून, हुंडाबळी' इत्यादि उदाहरणे देता येतील. 'स्त्री मोह' हा देखील अशाच स्वरुपाचा आहे. दररोजच्या वर्तमानपत्रांवरुन ह्याचा अनुभव घेता येईल. ही सर्व अवैध कृत्ये करीत आसतांना आपल्या मनाला, संततीला, यामुळे त्रास होणार आहे. याची खंत वाटत नाही. वाडवडीलांनी काही दुष्कृत्ये केलेली असतील तर इतरांच्या आत्म्याला झालेल्या त्रासामुळे शाप देतात त्यांचे परिणाम होतात.

हल्ली 'श्रमावर' भर न देता विनाश्रम, सहज पैसा व सुखसाधने कशी उपलब्ध होतील यावर तरुण पिढी 'विचार' करते. आशापूर्ति झाली नाही म्हणजे 'अवैध' मार्गाचा अवलंब करतात. सारासार विचार, विवेक, संयम ह्यांच विचार सुटलेला आहे. विवेक सुटल की मानवाचा तोल सुटतो. अशाप्रकारे पूर्वजांनी केलेल्या घोर कृत्यांची : घराणे शापग्रस्त, असल्याची 'वंशात वेडेपणा' असण्याची बीजे जातकाच्या कुंडलीत ज्योतिषशास्त्र दृष्ट्या असावयास पाहिजेत. कारणाशिवाय कार्य नसते या सिध्दान्तानुसार कदाचित ती बीजे चालू परिस्थितीत सापडली नाहीत म्हणून ती पूर्वजन्म काली नसतीलच असे म्हणता येत नाही. झाडाचे मूळ/ बुंध्यात जर किड असले तर ते पाने, फुले व फळे येथपर्यंत पोहोचते. एखाद्या घराण्याची वर्तमान पिढी जन्मभर अपयशी, दु:खी, दारिद्र्य भोगणरी पण शीलवान असते. काही घराण्यांत अत्यंत बुध्दीमान व भौतीक दृष्ट्यां संपन्न अशा प्रकारची मुले असतात पण शारिरीक वैगुण्य अपंगत्व, वेडेपणा, बुध्दीमंदता कोठेतरी सापडतो. मानसिक अशांतता दिसते. अशी सुसंस्कृत, शीलवान घरणी पाहण्यांत आलेली आहेत. या सर्वांचा परीणाम त्या व्यक्ति अतित्रासामुळे आत्महत्येसारख्या टोकावरच्या भूमिकेपर्यंत सुध्दा पोहोचतात.

या दृष्टीने कुंडल्या पाहत असतांन राहू विषयक काही योग दृष्टीस पडले त्यांत खालीप्रमाणे ग्रहस्थिती आढळली. १) लग्नाच्या चतुर्थात राहू, २) चंद्राच्या चतुर्थात राहू, ३) चतुर्थेश राहू युक्त, ४) कुंडलीत कोणतेही स्थानी शनी राहूची अंशात्मक युती, ५) धनस्थानी राहू, ६) धनेश राहू युक्त याशिवाय ६, ८, १२ स्थानी राहू असता राहूचे दशेत जास्त त्रास होतो. या स्थिती व्यतिरीक्त होणारा त्रास हा इतर ग्रहमानामुळे होतो हे लक्षांत घेऊन जाणकार ज्योतिषांनी राहूचे आयुष्यांत राहुची दशा येऊन गेली असेल व चालू काळांत ती नसेल तर नुसता कालसर्प योग व दुषित राहू म्हणून हे महागडे विधी सांगावयाचे का? घराण्यांत आसुरी संपत्ती आलीच नसेल तर राहू ग्रहाला दोष द्यावयाचा कां माता, पिता हयात असतांना मुलाने हे विधी केले तर चालते का? उठसूट सांगण्याचे 'हे' विधी नाहीत. शेवटचा व टोकाचा उपाय म्हणून करावयाच्या ह्या बाबी आहेत.

वाचकांनी हे लक्षांत घ्यावे की, लेखकाचा या विधींना विरोध मुळीच नाही पण सांगण्याच्या पद्धतीबद्यल मतभेद आहे. सांप्रतचे विज्ञान युगांत मानवाने चिकीत्सक बुद्धी जागृत करुन निर्णय घेतले पाहिजेत. जाणकर ज्योतिषी या शास्त्राद्वारे समाजसेवेचे/समाज प्रबोधनाचे कार्य करीत असतो. जातकाच्या अज्ञानाचा, विश्वसाचा

स्वस्वार्थासाठी गैरफायदा घेणे ही गोष्ट केव्हाही उचीत नाही.

ह्यासांठी राहूचे ग्रहावरुन होणारे भ्रमण विचारांत घ्यावे. तसेच जन्मनक्षत्रांपासून ३,५,७,१२,१४,१६,२१,२३,२५ ह्या नक्षत्रांतून राहूचे भ्रमण नाही ना; ह्याचही विचार करावा. मंदगतीमुळे दिर्घकाल राहणाऱ्या ग्रहांचा परिणाम जास्त होतो. हे आपणांस विदीत आहेच.

राहूचे ग्रहांवरुन होणारे भ्रमण :

१) राहू वरुन राहूचे भ्रमण असता गोष्टी आकस्मिक होतात. संकटे अचानक येतात.

२) रविवरुन राहूचे भ्रमण असता तीन महिनेपर्यंत अनिष्ट फले मिळतात. शारिरीक कष्ट, मनस्ताप, अधिकार भंग होतो.

३) चंद्रावरुन राहू जात असता उद्विग्नता प्राप्त होते. मानसीक समाधान नष्ट होते. पारतंत्र्य येते. दिवाळे निघते. ही फले पांच महीने मागे/पुढे मिळतात.

४) मंगळावरुन राहूचे भ्रमण असता द्रव्यनाश होतो; कोर्ट कचेऱ्यांचे शुक्लकष्ठ पाठीमागे लागते. वाईट कामाकडे मनाची वृती जाते. स्थावराचा होतो.

५) बुधावरुन राहूचे भ्रमण असता समतोल वृती बिघडते. सारासार विचार शक्ती/ स्मरणशक्ती धोके देते. खोट्या साक्षी देणे, खोट्या सह्या करणे यामुळे प्रकरण अंगावर शेकते.

६) गुरु वरुन राहूचे भ्रमण असता आकस्मिक लग्न जमते. अधिकार प्राप्त होतो. पैसा भरपूर मिळतो. सर्व गोष्टी शुभ घडतात.

७) शुक्रांवरुन राहूचे भ्रमण असता स्त्री आजारी पडते. द्रव्यहानी होते. घरातील स्त्री व्यक्तिंना पिशाच्यबाधा होते.

८) शनीवरुन राहूचे भ्रमण असता अकल्पित व आकस्मिक संकटे येतात. एखादी मोठी व्याधी, रोग होतात.

आपल्या पूर्वजांनी केलेल्या भयंकर दुष्कृत्यांचा परिणाम म्हणून जे दोष असतात व त्यामुळे पुढील पिढीतील जातकांना जर त्रास होत असेल तर त्यावर उपाय कोणता असा प्रश्न निर्माण होतो. माझ्या माहितीप्रमाणे कालसर्प शांतीचा उल्लेख कोठे सापडत नाही. मात्र सर्पशांतीचा उल्लेख सापडतो. खाली दिलेले दोष राहूमुळे घराण्यात पिढ्यान पिढ्या त्रास देत असतात. कालमानाने त्यांची नांवे बदलली तरी तत्त्व मात्र बदलत नाही.

दोष १ ला नष्टांश धन (नष्ट झालेल्या घराण्याची मिळालेली संपत्ती)

दोश २ रा= खून, आत्महत्या, विषप्रयोग

दोष ३ रा= दुसऱ्याचा चांगला चाललेला संसार वैयक्तिक कामेच्छा पूर्ति करता अनिष्ट व हीन दर्जाचे उपायाने पतिपत्नींचा प्रेमसंबंध तोडून टाकण्याचा प्रकार.

दोष ४ था= घरातील निरपराध, आश्रीत व्यक्तिंचा अमानूष प्रकरे छळ करणे.

दोष ५ वा= परधनाचा अपहार पैसे प्रचंड व्याजाने देणे व त्याच्या वसूलीसाठी त्या व्यक्तिच्या आत्म्याला तळमळायला लावणे.

वरील प्रकारचे दोष असता त्यांचा परिहार करण्यासाठी खालील प्रमाणे कृत्यें केली असता मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त होऊन परिस्थिती सुधारण्यास मदत होते.

परिहार १ = नष्टांश धन घरी आले असता ते कोणत्यातरी धार्मिक समाजोपयोगी संस्थेला दान करणे. ते धन हातानू गेल्याशिवाय सुख लाभत नाही.

परिहार २ = ज्या व्यक्तिचे घरात खुन, आत्महत्या, व्यंग, वेडेपणा इत्यादि दोष असतील त्यांनी मृत व्यक्तिंचे तिथिनुसार श्राध्दादि विधी करणे. भगवान शंकराची आराधना, उपासना करणे.

परिहार ३ = गरीब, अज्ञनी जनांचे संसार जोडणे.

परिहर ४ = ज्या व्यक्तिचा छळ होऊन ती मृत झाली असेल, त्या व्यक्तिच्या नावाने देव्हाऱ्यात एक टाक करुन अश्विन शुध्द अष्टमीस त्याच्या नावाने मृत स्त्री विधवा असेल तर विधवा व मृत स्त्री सवाष्ण असेल तर सुवासीनींना बोलावून भोजन द्यावे व वस्त्रें नेसवावी.

परिहार ५ = सुर्याची उपासना करणे.

वरील दोषावर हे परिहार सुचविले आहेत; बुध्दीवाद्यांसाठी संत वाडमयाचे, स्वराशीप्रमाणे परिशिलन करावे.

१-५-९ राशी - समर्थ रामदासांचे वाङमय वाचावे.

२-६-१० राशी - संत ज्ञानेश्वरांचे वाङमय वाचावे.

३-७-११ राशी - संत तुकारामांचे वाङमय वाचावे.

४-८-१२ राशी - संत एकनाथांचे वाङमय वाचावे.

संदर्भ - ज्योतिर्विद्या नवनीत (त्रैमासिक) - डिसेंबर २०००

बालारिष्ट -एक अभ्यास

नराणां कुंजराणांच विंशोत्तरशतं विदु: ॥

यात मनुष्याचे पूर्ण आयुष्य १२० वर्षे सांगितले आहे. यापेक्षा जास्त आयुष्याल दिव्यायु असे शास्त्राकार म्हणतात. हे आयुष्य योगाभ्यास, मंत्रसामर्थ्य व दिव्यौषधि यांच्या योगाने प्राप्त होते.

अष्टौ बालारिष्टमादौ नरांणां योगारिष्टं प्राहुराविंशति: स्यात् ॥
अल्पं चाद्वाविंशतो मध्यमायुरासप्तत्या: पूर्णमायु: शतान्तम् ॥

आठ वर्षेपर्यंत बालारिष्ट, २० वर्षेपर्यंत योगारिष्ट, ३२ वर्षापर्यंत अल्पायु, ७० वर्षापर्यंत मध्यायु व १०० वर्षापर्यंत पूर्णायु असे आयुष्याचे विभाग केलेले आहेत.

यात मनुष्याचे आयुष्य शंभर वर्षेच कल्पिलेले आहे. परंतु यापेक्षा जास्त जगलेले क्वचित आढळतात. म्हणून पूर्णायु १२० व दीर्घायु १०० वर्षे असे भाग करावे असे वाटते.

दशाप्रकारात अष्टोत्तरीवरुन १०८ वर्षे पूर्ण आयुष्य मानलेले दिसते. म्हणून "दशा विंशोत्तरी ग्राह्या" म्हणजे विशोत्तरी दशा ग्राह्य आहे असे म्हटलले आहे. विंशोत्तरीत १२० वर्षे पूर्णायुत्व मानलेले दिसते.

यातील पहिला विभाग ८ वर्षाचा असून त्याला **"बालारिष्ट"** असे नांव दिलेले आहे.

आद्ये चतुष्के जननीकृताद्यैर्मध्ये तु पित्रार्जित पापसंघै ॥
बालस्तदन्त्यासु चतु शरस्तु स्वकीयदौषै: समुपैति नाशम् ॥

पहिल्या चार वर्षात आईच्या कर्मांनी, दुसऱ्या चार वर्षात बापाच्या कर्मांनी व शेवटच्या चार वर्षात स्वत:च्या कर्मांनी बालक मरण पावते असे सांगितलेले आहे. म्हणजे हा विभाग १२ वर्षात आहे असे ठरते.

अद्वादशाब्दान्तरयोनिजन्मनामायु: कला निश्चयितुं न शक्यते ॥

बारा वर्षे पर्यंत मुलांच्या ग्रहांवरुन त्यांचे आयुष्य समजणे शक्य नाही असे प्राचीन ज्योतिर्विद म्हणतात.

मात्राच पित्रा कृतपापकर्मणा बालग्रहैनोशमुपैति बालक: ॥

आईबापांच्या पापकर्मानी मुलांचे ग्रह त्यांना मारक होतात. ही मर्यादा ८ वर्षांची आहे व त्यात पहिली चार आईच्या दोषांनी व दुसरी चार बापाच्या दोषांनी मारक होतात असे याचे तात्पर्य आहे.

पापकर्म म्हणजे कुपथ्य, दुराचरण व हयगय (दुर्लक्ष) किंवा पूर्वजन्मीची दृष्कृत्ये. लहानपणी ४ वर्षेपर्यंत मुलांच्या संगोपनाचे काम मुख्यत्वे आईकडेच असते. पुढे व बारा वर्षेपर्यंत मुले स्वछंदाने वागू लागतात. आईबापांची नजर चुकवून वाटेल ते खातात व भटकतात. त्यांना त्या स्वत:ला कसे जपावे याचे ज्ञान असते. त्यामुळे त्यांना भयंकर रोग किंवा अपघात होऊन मरण येते. म्हणून १२ वर्षे मुलांच्या आयुष्याचा विर्णय करीता येत नाही असे ज्योतिर्विदांनी ठरवले.

प्रयत्नवादाच्या दृष्टीने हे म्हणणे बरोबर आहे. पंरतु ज्योतिषशास्त्राला हे पटत नाही. मरण मग ते केव्हांही असो ते ज्योति:षशास्त्राने समजलेच पाहिजे एक, किंवा ते शास्त्रमर्यादेच्या बाहेरचे तरी असले पाहिजे. माझ्या मते ते शास्त्रमर्यादेच्या बाहेरचे आहे. ज्योतिष:शास्त्राने मरणप्राय स्थिती समजेल परंतु तो त्या वेळी मरेलच असे निश्चयात्मक समजत नही. ज्योति:षशास्त्राच्या फाजील अभिमानाने कोणी काहीही म्हणोत. प्राचीन ज्योतिर्विदांनी १२ वर्षेपर्यत आयुष्याचा निश्चय होत नाही म्हणून म्हटले ते बरोबर आहे. पण त्याला जे कारण सांगितले ते मात्र शास्त्राला धरुन नही. ती केवळ उडवा उडवी आहे.

मृत्यूचा निश्चय करणे अशक्य नसले तरी ते दुर्बोध आहे याबद्दल शंकाच नाही. आयुष्याचे जे विभाग केलेले आहेत त्यांचेही ज्ञान जेथे दुर्ज्ञेय तेथे मृत्युचे वर्ष कसे समजूं शकेल? तथापि सर्व बाजूंनी पूर्ण विचार केला तर क्वचित मृत्युकाल समजणे शक्य आहे. याचे दोन मार्ग आहेत. नातलगांच्या कुंडल्यांवरुन एखाद्याच्या मृत्युकालाचे किंचित अनुमान करता येते. ते अनुमान व जन्ममणाराची अनिष्ट ग्रहस्थिति यांचा मेळ घेतल्यास मृत्यु निश्चित होऊ शकेल. पण हेही काम काही सुलभ नाही. यासाठी मृत्यु सांगण्याच्या भानगडीत कोणी पडू नये हेच उत्तम. ज्योतिष्याने पाहिजे तर आपल्या समाधानासाठी अनुमान करुन ठेवावे व ते कसे काय जुळते ते पहावे. पण मृत्यु कोणालाही सागूं नये.

किमान दोन बाबींचा विचार केल्याशिवाय शास्त्रज्ञ ज्योतिष्याने मुलाच्या आयुष्याचा विचार करु नये. कारण आईबापांना जर मुले जगण्याचा योग नसेल तर मुलाच्या कुंडलीतला एखाद्या साधा अनिष्ट योगसुद्धा मारक होतो. परंतु आईबापांचा संततीयोग चांगला असेल तर मुलाला मारकयोग बलवत्तर असूनही ते मूल मरणार नाही. भयंकर आजारी मात्र होऊ शकेल.

कित्येक मुलांना ज्येष्ठ भावंडाला मारकयोग असतो, तर कित्येकांना पाठीवरील भावंड न जगण्याचा योग असतो. कित्येकांना ज्येष्ठ व कनिष्ठ या दोघांनाही मारकयोग असतो, म्हणून आईबापांच्या संततीयोगांवरून जे ज्ञान होते त्यापेक्षा भावंडांच्या भ्रातृयोगावरून अधिक स्पष्ट होते. यासाठी भावंडांचे भ्रातृयोगही विचारात घ्यावे.

यासाठी खालील नियमांनी त्याच्या आयुष्याची कल्पना करावी.

१. आईबापाना (विशेषत: आईला) मुले जगण्याचे योग कशा प्रकारचे आहेत.

२. गर्भकाली किंवा प्रसूतिकाली त्यांचे संततीस्थान कसे आहे.

३. झालेल्या बालकाचे तारकमारक योग कसे आहेत.

४. पूर्वीच्या बालकाला पाठीवरील भाऊबहिणींचा कसा योग आहे.

जो ज्योतिषी या मुद्यांचा विचार न करता केवळ मुलाच्या ग्रहयोगावरून निर्णय देतो तो एक तर दिव्यज्ञानी असला पाहीजे किंवा कुडबुड्यांच्या पंक्तीतला तरी असला पाहीजे. कायदा, पुरावा व आत्मसंवेदना यांच्या सारसार विचाराने जो जज्मेंट देतो तो जसा उत्तम न्यायाधिश समजला जातो तसाच जो ज्योतिषी शास्त्राचे नियम, पुरावा व स्वयंस्फूर्ति यांच्या सारासार विचाराने निर्णय घेतो त्यालाच शास्त्रज्ञ ज्योतिषी म्हणता येईल.

इतक्या गोष्टीचा पूर्ण विचार करुन झालेले मूल लाभेल किंवा नाही ते ठरवावे. नंतर लाभणार नाही असे ठरले तर त्या मुलाला व आईबाप व भावंडे यांना अनिष्ट ग्रहयोग केंव्हा येतात ते पाहून मृत्यूचा काल ठरवावा. हे काम ज्योतिष्याने आपल्या समाधानासाठीच केवळ करावे. पुष्कळ अनुभव घ्यावा. त्याची टिपणे करावी व अशा रीतीने अभ्यास करुन खात्री झाली की आपणास मृत्यु समजतो, तरच दुसऱ्याला सांगावे व तेहि जिज्ञासु असेल त्याला, वाटेल त्याला सांगु नये.

*श्री विष्णू गोपाळ नवाथे यांच्या “सुलभ जातक” मधून साभार .

कुंडली से शारीरिक स्थिति का ज्ञान

प्रथम भाव यानी लग्नसे शरिरीक आकृति, रंग, रूप आदि का विचार किया जाता है। लग्न मे जिस प्रकारकी राशी और ग्रह होगे जातक का शरिर भी वैसा ही होगा। शरीरकी स्थिती के संबंधमें ग्रह और राशिओंके तत्व से विचार किया जा सकता है।

ग्रह-

सूर्य और मंगल - अग्नीतत्व के ग्रह है।
चंद्रमा और शुक्र - जलतत्व के ग्रह है।
बुध - पृथ्वीतत्व का, गुरु आकाश यानी तेज तत्वका और शनी वायुतत्वका ग्रह है।

राशि -

मेष, सिंह, धनु - अग्नितत्व की राशियाँ है।
वृषभ, कन्या, मकर - पृथ्वीतत्व की राशियाँ है।
मिथुन, तुला, कुंभ - वायुतत्व की राशियाँ है।
कर्क, वृश्चिक, मीन - जलतत्व की राशियाँ है।

कुंडली में राशी संज्ञाओं पर से शारीरिक स्थिति ज्ञात करने के नियम।

१. लग्न जलराशि हो व उसमें जलग्रह की स्थिति हो तो जातक का शरीर मोटा होगा।

२. लग्न और लग्नाधिपति जलराशिगत होने से शरीर खूब स्थूल होगा।

३. यदि लग्न अग्निराशि हो और अग्निग्रह उसमें हो तो मनुष्य बलवान होता है; पर शरीर देखने में दुबला दिखाई पडता है।

४. अग्नि या वायुराशि का लग्न हो और लग्नाधिपति पृथ्वी राशिगत हो तो हडियाँ साधारणतया पुष्ट और मजबूत होती हैं और शरीर ठोस होता है।

५. यदि अग्नि या वायुराशि का लग्न हो, लग्नाधिपति जलराशिगत हो तो शरीर स्थूल होता है।

६. यदि लग्न वायुराशि का हो और उसमें वायुग्रह स्थित हो तो जातक दुबला, पर तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

७. यदि लग्न पृथ्वीराशि का हो और उसमें पृथ्वीग्रह स्थित हो तो मनुष्य नाटा होता है।

८. पृथ्वीराशि का लग्न हो और लग्नाधिपति पृथ्वीराशिगत हो तो शरीर स्थूल और दृढ होता है।

९. पृथ्वीराशि का लग्न हो और उसका अधिपति जलराशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

लग्न की राशि ऱ्हस्व, दीर्घ या सम जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की उँचाई समझनी चाहिए। शरीर की आकृति निर्णय के लिए निम्न नियम हैं :

१. लग्नराशि कैसी है? २. लग्न में ग्रह है, तो कैसा है? ३. लग्नेश कैसा ग्रह है? और किस राशि में है? ४. लग्नेश के साथ कैसे ग्रह हैं? ५. लग्न पर किसकी दृष्टि है? ६. लग्नेश अष्टम या द्वादश भाव में तो नहीं है? ७. गुरु लग्न में है अथवा लग्न को देखता है। कैसी राशि में बृहस्पति की स्थिति है?

इन सात नियमों द्वारा विचार करने पर ज्ञात हो जायेगा कि जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु तत्त्वों में किसकी

विशेषता है। अन्त में अन्तिम निर्णय के लिए पहलेवाले नौ नियमों का आश्रय लेकर निश्चय करना चाहिए।

लग्नेश और लग्नराशि के स्वरुप के अनुसार जातक के रुप-रंग का निश्चय करना चाहिए। मेष लग्न में लालमिश्रित सफेद, वृष में पीलामिश्रित सफेद, मिथुन में गहरा लालमिश्रित सफेद, कर्क में नीला, सिंह में धूसर, कन्या में घनश्याम रंग, तुला में कृष्णवर्ण लाली लिये, वृश्चिक में बादामी, धन में पीत वर्ण, मकर में चितकबरा, कुम्भ में आकाश सदृश नीला और मीन में गौरवर्ण होता है।

सूर्य से रक्त-श्याम, चन्द्र से गौरवर्ण, मंगल से समवर्ण, बुध से दूर्वादल के समान श्यामल, गुरु से कांचन वर्ण, शुक्र से श्यामल, शनि से कृष्ण, राहु से कृष्ण और केतु से धुम्र वर्ण का जातक को समझना चाहिए।

भारतीय ज्योतिष - श्री नेमिचंद्र शास्त्री

****

कारक ग्रहाचे महत्व

फलज्योतिषशास्त्रातील काही सिद्धांत व नियम हे ज्या प्रमाणात महत्त्व देऊन अभ्यास करावयास पाहिजेत. त्या प्रमाणात अभ्यासले जात नाहीत. अनेक नियम नुसते वाचले जातात. डोळ्याखालून जातात, ज्योतिषांच्या तोंडी असतात पण कुंडली पाहताना त्याचा वापर, उपयोग कसा करता येईल, ह्याचे चिंतन केले जात नाही किंवा तशी अनूभूति अनेकांना आलेली नसते.

पंडित ज्योतिषी व अनुभव सिद्ध ज्योतिषी ह्यातील फरक मी स्वत: उत्तम अनुभवलेला आहे. आमच्या अगोदरच्या पिढीत एक ज्योतिषी अत्यंत मोठे पंडित होते. फलजोतिषशास्त्रावर भाषणेही उत्तम द्यावयाचे. दुसरे एक ज्योतिषी तसे फार न शिकलेले, भाषणबाजी फारशी न करता येणारे. पहिल्या ज्योतिषांचे पुस्तकी ज्ञान पुस्तकांत राहवयाचे पण दुसरे ज्योतिषी प्रत्यक्ष कुंडली पाहताना अचूक मर्म ओळखावयाचे व अचूक भविष्य सांगायचे, सांगावयाचे कारण ज्योतिषतत्त्वांचा अचूक वापर करता येणे महत्त्वाचे आहे.

निर्णायक घटक ठरवण्याच्या दृष्टीने सर्व सूत्रात मला जास्त अनुभवास आलेले सुत्र म्हणजे -

भावात भावपतेश्च कारकवशात फल योजयेत ।

कुंडलीवरुन जीवनातील कोणत्याहि गोष्टीचा अभ्यास, विचार करताना, त्या गोष्टीबद्दल भाकीत करताना तीन गोष्टींचा प्रामुख्याने विचार करावा लागतो. साकल्याने सारासार अभ्यासाने ज्या तीन गोष्टींकडे लक्ष द्यावे लागते. त्या तीन गोष्टी म्हणजे-

१) संबंधित गोष्टी संबंधी जे स्थान, जो भाव कुंडलीत असतो त्या स्थानाचा अभ्यास- त्या स्थानातील राशि, ग्रह वगैरे. (संबंधित गोष्टीसंबंधित भाव)

२) त्या स्थानाचा-भावाचा अधिपति-भावेश हा दुसरा महत्त्वाचा ग्रह. (संबंधित गोष्टीसंबंधित भावेश)

३) त्या गोष्टी संबंधी, त्या स्थाना संबंधीचा कारक ग्रह. (संबंधित गोष्टीसंबंधित कारक ग्रह) हा तिसरा महत्त्वाचा ग्रह ह्या तीन गोष्टीचा विचार करुन मगच अंतिम निर्णयाला यावे लागते.

ह्या संबंधात कोणत्या गोष्टीत किती महत्व द्यावयाचे हा खरा कौशल्याचा व शास्त्रातील अनुभवाचा भाग असतो. उदाहरणार्थ सप्तमात मंगळ-शनि पाहिले की कोणत्याही ज्योतिषाच्या मनांत द्विभार्यायोग होणार असे भाकीत करण्याची इच्छा होईल पण असे काही वर्तवण्यापूर्वी मी सांगत असलेला मंत्र जर तुम्ही लक्षांत ठेवलात तर तुमचे अनुमान फारसे चुकणार नाही.

एखादी घटना, गोष्ट घडणे म्हणजे जे अंतिम फलीत ते फळासारखे आहे. ग्रहांची स्थानगत स्थिती ही बऱ्याच प्रमाणात बीज रुपने आहे. उदा. सप्तमात मंगळ+राहु ही पेरले म्हणजे त्यापासून फळ येईल असे नसते तर त्याचे झाड होऊन त्याला फुले आली पाहिजेत. तद्वत भावेश हा ग्रह फूल-पुष्य आहे. सप्तमांत मंगळ राहू असून बीज स्वरुपात योग असतानाच सप्तमेश समजा षष्टात असेल, सप्तमेश निर्बली, पापग्रहांच्या युतीत, दु:स्थानी असेल तर द्विभार्या किंवा वैधव्य योग पुष्प-स्वरुपातही आहे. अशी परिस्थिती असली तरी जसे फूल आले म्हणजे त्याचे फळ होईलच असे नसते, फूल असले म्हणजे फलधारणा होईलच असे निश्चित नसते तद्वत अशा परिस्थितीतही द्विभार्या किंवा वैधव्य योग कदाचित येणारही नाही. अंतिम फळ बघण्याच्या दृष्टीने सप्तमस्थानाचा, वैवाहिक जीवनाचा, पत्नीचा कारक ग्रह शुक्र तो कोणत्या राशीत, स्थानात, किती प्रमाणात बलवान किंवा निर्बल आहे ह्यावर अंतिम निकाल अवलंबून आहे. समजा अशा वेळी शुक्र स्वराशीत, केंद्रात, बलवान. शुभग्रह युक्त असेल तर द्विभार्या योग होणारही नाही. पण शुक्र नीचराशीत, पापग्रह युक्त, निर्बल असेल तर द्विभार्या योग होईल- असे भाकीत करण्यास हरकत नाही.

कारक ग्रहाला अनन्य साधारण महत्त्व आहे. ह्याचे भान ठेवूनच भविष्य वर्तवावे. एखाद्या गुन्ह्याबद्दल खालच्या कोर्टत, हायकोर्टात, सुप्रीम कोर्टात, फाशीची शिक्षा जरी झाली तरी राष्ट्रपति ती कदाचित ज्याप्रमाणे फिरवू शकतो त्याप्रमाणे कारक ग्रहाला महत्त्व आहे. शुक्र- पत्नि कारक, गुरु-संततिकारक, रवि-पितृकारक, मंगळ- भातृकारक, चंद्र- मातृकारक वगैरे ग्रहांचा अत्यंत सखोल अभ्यास करुन प्राचीन ग्रंथकार कशी आश्चर्यकारक भविष्ये वर्तवीत ह्याचा मी अनुभव घेतला आहे.

---

* श्री व. दा. भट यांच्या “असे ग्रह - अशा राशि” मधून साभार.

अमृतसिद्धियोग

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधनुराधा शनिरोहिणी च ।
सोमे च सौम्यं भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोग: ॥

रविवारी हस्त नक्षत्र, सोमवारी मृग, मंगळवारी अश्विनी, बुधवारी अनुराधा, गुरुवारी पुष्य, शुक्रवारी रेवती आणि शनिवारी रोहिणी नक्षत्र आल्यास अमृतसिद्धी योग होतो. हा सामान्यत: सर्व कार्यास शुभ मानन्यात येतो.

वर्ज्य अमृतसिद्धियोग

गुरुपुष्यं विवाहे च प्रयाणे शनिरोहिणीम् ।
भौमाश्विनी प्रवेशे च सर्वथा परिवर्जयेत् ॥

गुरुपुष्य विवाहासाठी, शनि-रोहिणी अमृतसिद्धियोग प्रयाणास, मंगळ- अश्विनी अमृतसिद्धियोग गृहप्रवेशास वर्ज्य करावा.

सहदेव भाडळी

पैठण येथील 'मार्तंड जोशी नावाच्या एक ब्राह्मण ज्योतिष्याला अंत्यज (शूद्र) स्त्रीपासून झालेली एक विद्वान कन्या भाडळी, तिच्या सहदेव नावाच्या सावत्र भावाच्या नावासकट "सहदेव भाडळी" या नावाने ओळखली जाते.

सहदेव भाडळी हा ग्रंथ बाराव्या शतकात रचला गेला आहे, यात अनेक प्राणी/पक्षी यांच्या निरीक्षणावरून हवामानाचे अंदाज कसे करतात याचे पारंपरिक वर्णन आढळते. पूर्वी समाजाचा प्रत्येक घटक हा, ज्योतिषाच्या म्हणण्यानुसार यंदा पाऊसपाणी कसे होईल, येते वर्ष कसे जाईल हे जाणून घेण्यासाठी सहदेव भाडळीचा आधार घेत असे. सहदेव भाडळी ही कला मूलत: पर्जन्यमानाच्या तर्काशी संबंधित आहे. तो लिहिताना भाडळीने पर्जन्य विचारांवर स्वतःचे असे काही विचारही मांडले आहेत. त्याचबरोबर इतर भविष्यविषयक ज्ञानही यातून मिळते. भाडळीने संस्कृतचे बंधन तोडून प्राकृतात ज्ञाननिर्मिती केली. तिने 'मेघमाला' नावाचा व्यासांनी लिहिलेला ग्रंथ प्राकृतात आणला. तिने गांधर्व विवाह, शल्यचिकित्सा, आयविचार, पिकांवरील रोग व त्यांवरील उपचार, आरोग्य व ज्योतिष, पर्जन्याचे हवामान शास्त्राच्या अंगाने केलेले विवेचन, स्त्री-प्रशंसा व इतरही अनेक आधुनिक बाबींचा विचार मांडला.तिच्या ज्ञानरचनेवर शाहीर हैबती घाडगे यांनी रचना केल्या व भाडळीचे ज्ञान लावण्यांच्या रूपाने जिवंत ठेवण्याचा प्रयत्न केला. सहदेव भाडळी विषयी महाराष्ट्रात दोन कथा प्रचलित आहेत त्या अशा...

पैठण नगरात मार्तंड जोशी नांवाचा एक मोठा विद्वान ब्राह्मण रहात असे. तो ज्योतिष शास्त्रात निपुण असून त्रिकाल ज्ञानी म्हणून त्याची ख्याती झाली होती. त्याला त्याच्या धर्मपत्नी पासून सहदेव नावाचा पुत्र झाला व एका शुद्र स्त्रीपासून भाडळी नांवाची कन्या झाली. पुढे काही वर्षांनी मार्तंड जोशी मरण पावले.

सहदेव हा आपल्या लहानपणापासूनच ज्योतिष विद्या शिकत होता. पण त्याला त्रिकाल ज्ञान जाणण्याची विद्या येत नव्हती. तेंव्हा एके दिवशी त्याने विचार केला की, त्रिकालज्ञान जाणण्याची विद्या गुरुशिवाय प्राप्त होणार नाही त्यासाठी सर्वप्रथम आपल्याला एक गुरु केला पाहीजे म्हणून तो आपल्याच गावातील एका गोसाव्याच्या मठात गेला व त्याला आपली सर्व हकीकत सांगून आपणास त्रिकालज्ञान विद्या शिकविण्याबद्दल आग्रह करु लागला. तेव्हा तो गोसावी गुरुजी म्हणाला, बाबारे, ही विद्या मलाही अवगत नाही. माझे गुरुजी त्या विद्येत निपूण होते, परंतु ते माझ्या दुर्दैवाने समाधिस्त झाले. ते जर जिवंत असते तर त्यांचेपासून तुला ती विद्या नक्कीच प्राप्त करुन दिली असती. पण आता एक उपाय आहे. तुला जर ती विद्या साध्य करुन घ्यायची असेल, तर माझ्या गुरुजींच्या समाधी धारानगरी येथे आहे जाऊन, माझ्या गुरुजींच्या समाधीवर लिंबाचा वृक्ष आहे, ती समाधी ओळखून त्या समाधीत माझ्या गुरुजींच्या डोक्याची जी कवटी आहे ती उकरुन काढून घेऊन ये व नदीवर जाऊन स्नानादिक कर्मे केल्यानंतर ती कवटी एका दगडावर उगाळून तू दररोज पीत जा. म्हणजे तिच्या योगाने तुला त्रिकालज्ञान प्राप्त होऊन तू ज्योतिषशास्त्रात निपूण होशील. असे त्या गोसाव्याने सांगितले. ते ऐकून सहदेव तसाच धारानगरीस गेला. त्याने ती कवटी मिळविली व आपल्या गावी आणून गुपचूप नदीच्या वाळंवटात पुरुन ठेवली. दररोज सकाळी तो नदीवर स्नानादी कर्मे आटोपून कवटी दगडावर उगाळून पिऊन, पुन्हा तेथेच ठेवून तो घरी येत असे. असा त्याचा नित्य क्रम चालू होता व तेंव्हापासून त्यास हळूहळू ज्ञान प्राप्त होऊ लागले.

नित्यक्रमाप्रमाणे सहदेव नदीतीरी जाऊन ती कवटी उगांळून पीत असता मार्तंड जोशी यास शुद्र स्त्रीपासून झालेली कन्या भाडळी हिने ते कृत्य पाहिले.

नंतर सहदेव आपले काम आटोपून कवटी पुन्हा त्याच जागेवर ठेवून घरी गेला. भाडळी नदीवर गेली, आंघोळ केली व कवटी पुरलेल्या जागी येऊन, तेथून ती काढून घेऊन घरी आली. तिने ती कवटी उखळात कुटून पीठ केले व पाण्यात कालवून पिऊन टाकिले. त्यामुळे तिला त्रिकालज्ञान प्राप्त झाले व ती ज्योतिषशास्त्रात पूर्ण निपूण झाली. ती लोकांत जे जे सांगे ते ते सर्व खरे होऊ लागले. त्यामुळे तिची सर्वत्र प्रसिद्धी झाली.

दुसरे दिवशी नेहमीप्रमाणे सहदेव नदीवर गेला. पाहतो तो तेथे कवटी नाही. त्यामुळे मनात दुःखी होऊन तो पुन्हा गोसावी बुबाजवळ गेला व त्यास सर्व हकीगत सांगितली. तेव्हा गोसावी बुवा अंतर्ज्ञानानी म्हणाले-"बाबारे, तुझ्या नशीबी जितकी विद्या होती तितकी तुला मिळाली. जास्त कोठून मिळेल? भाडळी ही जातीची मांगीण, पण तिच पूर्वसंचित चांगले म्हणून तिला हे ज्ञान प्राप्त झाले. कवटीचा पुष्कळ भाग पोटात गेल्यामुळे ती ज्ञानी झाली. आता उपाय नाही. ईशवराची इच्छा! आता तू तिचा शिष्य हो व तिजपासून जास्त ज्ञान मिळव." नंतर जातीचा वगैरे विचार न करता ज्ञानप्राप्तीसाथी म्हणून सहदेव तिचा शिष्य झाला. पुढे ज्योतिषशास्त्रासंबंधी दोघांची प्रश्नोत्तरे (कविता, श्लोक, लावण्या वगैरे रुपाने) होऊ लागली. ती लोकांच्या प्रचीतीस येऊ लागली. त्यामुळे ज्योतिषशास्त्र त्या दोघांचीही प्रसिद्धी झाली.

दुसऱ्या एका कथेनुसार मार्तंड जोशी हे एक विद्वान ज्योतिषी होते. एका गावाहून दुसऱ्या गावाला जाताना एकदा त्यांना, त्या काळी एका अंत्यज समजल्या जाणाऱ्याच्या झोपडीत आसरा घ्यावा लागला. घरात एक म्हातारी आणि तिची मुलगी राहत असे. आपण घरी वेळेवर पोहोचू शकत नाही या विचाराने जोशी अस्वस्थ होते. म्हातारीने कारण विचारले. त्यांनी सांगितले की आजच्या दिवशी ज्या स्त्रीची गर्भधारणा होईल तिला होणारा पुत्र हा मोठा ज्योतिषी होणार आहे; मी जंगलात अडकल्यामुळे ही सुवर्णसंधी हुकणार आहे. म्हातारीने त्यांना आपल्या मुलीबरोबर रात्र घालवायची परवानगी दिली.

मार्तंड जोशी यांना त्या अंत्यज मुलीपासून पुत्र न होता कन्या झाल्याने जोशी फार उदास झाले. कन्येचे नाव भाडळी ठेवले होते. पुढे भाडळीला घेऊन मार्तंड जोशी त्यांच्या घरी आले. कालांतराने आपल्या सहदेव नावाच्या मुलाला ज्योतिष शिकवण्याचा प्रयत्न करीत असताना अचानक त्यांच्या लक्षात आले की शेजारी बसलेली भाडळी मन लावून ऐकते आहे. हीच भावी ज्योतिषी हे ध्यानात आल्यावर मार्तंड जोशींनी आपली सगळी विद्या भाडळीला दिली.

याच धर्तीवर हिंदीमध्ये "घाग भड्डुरी" नावाचे अशाच आशयाचे पुस्तक आहे. उत्तर भारतात एक वेगळी कथा सांगण्यात येते. उत्तरेत काही प्रांतातून वरील कथा प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिरांच्या नावानेही परिचित आहे.

****

हस्त रेखा परिचय
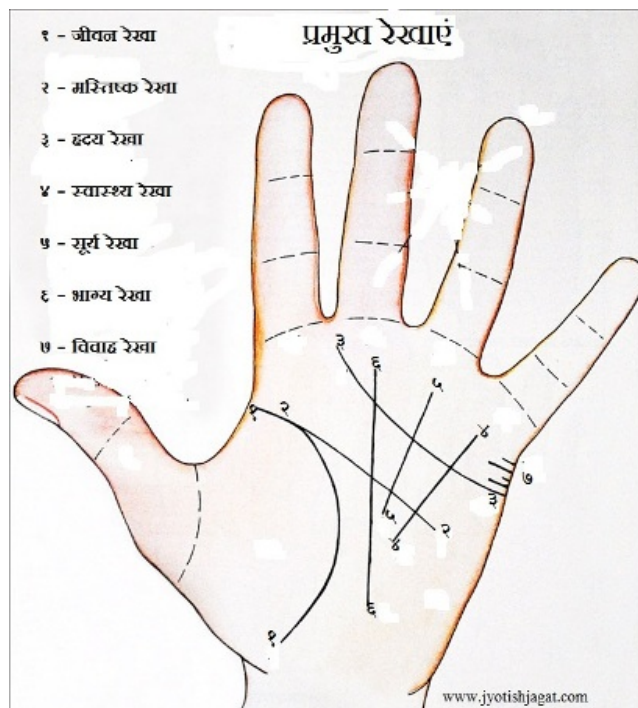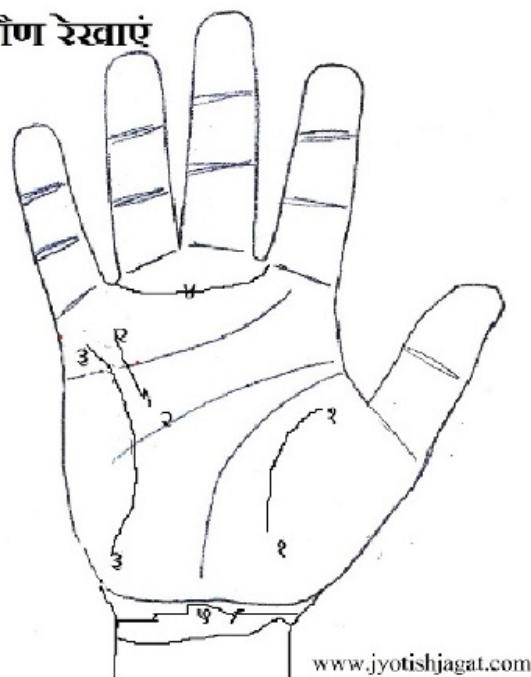
हस्त सामुद्रिक शास्त्र को सीधे तरीके से दो भाग में बात सकते है। १) हस्ता लक्षण शास्त्र और २) हस्त रेखा शास्त्र। हस्त लक्षण शास्त्र में हाथ की बनावट, रंग, आकार, स्पर्श अदि के माध्यम से व्यक्तिका स्वभाव जाना जा सकता है तो हस्त रेखा शास्त्र में रेखाओंके मध्यमा से भविष्य में होनेवाली घटना क्रम को जानने की कोशिस की जाती है। आज हम देखेंगे हस्त रेखाओंके बारे में।

हाथ पर सात (७) प्रमुख रेखाएं और पांच (५) गौण रेखाएं होती हैं। प्रमुख रेखाए इस प्रकार है।

१) जीवन रेखा : इस रेखा को आयु रेखा भी कहते हैं। यह बृहस्पति पर्वत के ठीक नीचे से चलती है और शुक्र पर्वत को घेरती हुई नीचे की ओर बढ़ती है। इस रेखा के विश्लेषण से आयु काल, बीमारी, मृत्यु आदि के बारे में जाना जा सकता है। यह रेखा लंबी, संकरी, गहरी और अनियमितताओं से रहित हो, और टूटी हुई न हो और इस पर कोई चिह्न न हो तो शुभ होती है। शुभ जीवन रेखा व्यक्ति के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं स्फुर्ति की सूचक होती है।

२) मस्तिष्क रेखा : मस्तिष्क रेखा तीन विभिन्न स्थानों से आरंभ हो सकती है- 1. गुरु पर्वत के केंद्र से 2. जीवन रेखा के आरंभ से 3. जीवन रेखा के भीतर मंगल क्षेत्र से इस रेखा के विश्लेषण से व्यक्ति की प्रतिभा, ऊर्जा, लक्ष्य, दृढ़ता, तर्कक्षमता आदि के बारे में जाना जाता है।

३) हृदय रेखा : हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र से आरंभ होकर सूर्य पर्वत को पार करती हुई बुध पर्वत के मूल तक जाती

है। इस रेखा से भावुकता, प्रेम संबंध, मन की स्थिति आदि का विचार किया जाता है।

४)स्वास्थ्य रेखा : स्वास्थ्य रेखा बुध पर्वत क्षेत्र से आरंभ होकर नीचे की ओर जाती है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य, बीमारी, असाध्य रोगों आदि का विचार किया जाता है।

५) सूर्य रेखा : सूर्य रेखा का आरंभ जीवन रेखा, चंद्र पर्वत क्षेत्र, मंगल पर्वत क्षेत्र, मस्तिष्क रेखा अथवा हृदय रेखा कहीं से भी हो सकता है। इसे प्रतिभा रेखा अथवा सफलता रेखा भी कहा जाता है।

६) भाग्य रेखा : भाग्य रेखा जीवन रेखा, मणिबंध, चंद्र पर्वत, मस्तिष्क रेखा या फिर हृदय रेखा से आरंभ होकर मध्यमा के पर्वत तक जाती है। भाग्य रेखा के विश्लेषण से कार्य व्यवसाय, कूटनीति, लोकप्रियता आदि का विचार किया जाता है।

७) विवाह रेखा : विवाह रेखा कनिष्ठिका अंगुली के नीचे और हृदय रेखा के उपरसे बुध पर्वत पे चलती है। विवाह रेखा के विश्लेषण से विवाह ,प्रेमसंबंध, वैवाहिक जीवन तथा जीवन साथी के विषय में विचार किया जाता है।

गौण रेखाएं : हाथ में निम्नलिखित पांच गौण रेखाएं पाई जाती हैं। गौण रेखाए कोनसी है इसमें काफी मतभेद पाए जाते है। ज्यादातर विशेतज्ञ नीचे दी गयी रेखाओंको प्रमुख गौण रेखाए मानते है।

१) मंगल रेखा : यह मंगल पर्वत से प्रारंभ होकर जीवन रेखा की ओर जाती है। इससे शौर्य, आत्मविश्वास, क्रोध आदि का विश्लेषण किया जाता है।

२) वासना रेखा : यह स्वास्थ्य रेखा के समानांतर होती है। इस रेखा से स्त्री अथवा पुरुष की काम भावना का विश्लेषण किया जाता है।

३) अंतरज्ञान रेखा : यह बुध पर्वत क्षेत्र से आरंभ होकर चंद्र पर्वत क्षेत्र की ओर जाती है। यह अर्द्धवृत्ताकार होती है। इससे पुरुष अथवा स्त्री के आंतरिक व्यक्तित्व भौतिकता, धर्म, ऋद्धि-सिद्धि आदि के बारे में विचार किया जाता है।

४) शुक्र कंकण (मेखला) : तर्जनी और मध्यमा के बिच में से शुरू होकर अमानिका और कनिष्ठिका के बिच में समाप्त होती है। (शनि और रवि पर्वत को घेरे हुए रहने वाली रेखा) इस रेखा से कामवासना, कलाप्रियता, सौंदर्यप्रियता के बारे में विचार किया जाता है।

५) मणिबंध रेखाएं : ये कलाई में पाई जाती हैं। इन रेखाओं को अन्य रेखाओं के साथ विश्लेषण कर उन्नति, भाग्यवृद्धि, विदेश यात्रा आदि का विचार किया जाता है।

हस्त रेखा अध्ययन के सामान्य सिद्धांत -

हस्त रेखाओं के प्रकार के बारे में पिछले लेख (हस्त रेखा परिचय) में हमने जाना। अब रेखाओं का अध्ययन करने के बारे में बताते है। हस्त रेखाओं का अध्ययन सावधानी के साथ करना चाहिए। रेखाओं का अध्ययन करने से पूर्व रेखा के बारे में जानकारी कुछ विशेष जानकारी कर लेनी उचित होगा। हस्त रेखाओं अध्ययन के कुछ सामान्य किन्तु मौलिक सिद्धांत पाठक गण जान ले। रेखाओं की जानकारी के साथ ही निम्न प्रकार की जानकारी पाठकों के लिए आवश्यक होती है।

रेखाए स्पष्ट सुन्दर लालिमा लिये हुए तथा साफ - सुथरी होनी चाहिए। इनके मार्ग में न तो किसी प्रकार का चिन्ह होना चाहिए और न किसी प्रकार का द्वीप होना चाहिए।

रक्तिम रेखाए व्यक्ति की प्रसन्नता और स्वस्थ मनोवृत्ति को दर्शाती है। किंचित पीलापन लिए हुयी रेखाए स्वास्थ्य में कमी तथा निराशावादी मानसिकता दर्शाती है। कालापन लिए हुयी रेखाए निराशा तथा कमजोरी सूचित करती है।

अगर किसी रेखा के साथ-साथ कोई और रेखा चले तो उस रेखा को शक्ति मिलती है। अतः उस रेखा का विशेष प्रभाव समझना चाहिए।

कमजोर, दुर्बल अथवा मुर्झाई हुई रेखाएं बाधाओं की सूचक होती हैं। टूटी हुई रेखाएं अशुभ फल प्रदान करती हैं।

अस्पष्ट और क्षीण रेखाएं बाधाओं की पूर्व सूचना देती हैं। ऐसी रेखाएं मन के अस्थिर होने तथा परेशानी का संकेत देती हैं।

अगर कोई रेखा अपने आखरी सिरे पर जाकर कई भागों में बंट जाए तो उसका फल भी बदल जाता है। ऐसी रेखा को प्रतिकूल फलदायी समझा जाता है।

अगर किसी रेखा में से कोई रेखा निकलकर ऊपर की ओर बढ़े तो उस रेखा के फल में वृद्धि होती है।

अगर कोई रेखा निर्बल, कमजोर तथा अधिक सूक्ष्म हो तो ऐसी रेखा का प्रभाव गौण होता है अथवा यह प्रभावहीन होती है।

यदि किसी रेखा के मार्ग में वर्ग हो तो इससे उस रेखा को बल मिलता है और वह शुभ फल प्रदान करती है।

अगर किसी रेखा के ऊपर त्रिकोण का निशान हो तो उस रेखा से संबंधित कार्य शीघ्र होने की संभावना रहती है। स रेखाओं पर तारा कार्य में शीघ्र सफलता का सूचक होता है।

रेखाओं पर तिरछी रेखाएं हानिकारक होती हैं।

पतली रेखाएं श्रेष्ठ फल देने में सक्षम होती हैं। वहीं मोटी रेखाएं व्यक्ति की दुर्बलता का संकेत देती हैं।

अगर कोई रेखा गहरी हो, चलते-चलते बीच में रुक जाए, अस्पष्ट हो तो दुर्घटना का संकेत देती है।

ढलवां रेखाएं व्यक्ति के परिश्रम को तो स्पष्ट करती हैं परंतु उसके फल का संकेत नहीं देतीं। ऐसी रेखाओं से शुभ फल मिलने में संदेह रहता है।

अगर किसी रेखा में से कोई रेखा निकल कर नीचे की ओर जाए या नीचे की ओर झुके तो उसका फल प्रतिकूल होता है या कमी आती है। इसके विपरीत ऐसी कोई रेखा ऊपर की ओर जाए तो फल में वृद्धि होती है।

जंजीरनुमा रेखा अशुभ फल देती है।

यदि विवाह रेखा, जो बुध पर्वत पर होती है, जंजीरनुमा हो तो प्रेम प्यार में असफलता का मुंह देखना पड़ता है।

यदि मस्तिष्क रेखा जंजीरनुमा हो तो व्यक्ति अस्थिर बुद्धि वाला अथवा पागल हो सकता है।

लहरदार रेखा अशुभ मानी गई है। ऐसी रेखाएं शुभ फल प्रदान नहीं करती हैं।

रेखा अगर कहीं पतली और कहीं मोटी हो तो रेखा अशुभ होती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति बार-बार धोखा खाता है तथा सफलता-असफलता के बीच झूलता रहता है।

यदि प्रणय रेखा से कोई रेखा निकल कर ऊपर की ओर जाए तो प्रेम में सफलता और सुंदर पति अथवा पत्नी की प्राप्ति होती है। परंतु यदि नीचे की ओर रुख करे तो प्रेम में असफलता मिलती तथा पति अथवा पत्नी को अस्वस्थता का सामना करना पड़ता है।

वास्तु पुरुष जन्मकथा

वास्तु पुरुषाच्या जन्माच्या (उत्पत्तीच्या) अनेक वेगवेगळ्या कथा पुराण व वास्तु ग्रंथातून अढळतात. विश्वकर्मप्रकाश या वास्तुशास्त्राच्या प्रमाण ग्रन्थातही एक कथा अढळते, या कथेनुसार प्राचिन काळी त्रेता युगात ब्रह्मदेवाने एक महाभूत (विशालकाय प्राणी) निर्माण केला. त्याने आपले संपूर्ण शरिर भूमंडलावर पसरवून दिले. त्याला पाहून देवता व दानव दोघेही आश्चर्यचकीत व भयभीत झाले व ब्रह्म देवाच्या शरण गेले. त्यावेळी ब्रह्मदेवानी त्या देवता व दानवाना असा सल्ला दिला की, याला अधोमुख पालथा पाडून त्यावर स्वार व्हा व त्यांनी तसे केले. मग त्या महाकाय पुरुषाने शरणांगती पत्करुन देवाकडे याचना केली त्यावेळी ब्रह्मदेवाने त्याला आपला मानसपुत्र मानून असा वरदान दिला की,.......

याशिवायही अनेक पुराणांतून व वास्तू ग्रन्थांतून अनेक वेगवेगळ्या कथा अढळतात. पण त्यापैकी सर्वात प्रचलित कथा ही मत्स्य पुराणातील आहे. ती अशी की, एकदा भगवान शिव व अंधकासुराचे द्वन्द (युध्द) होत असते त्यावेळी त्या दोघांच्या घामाचे काही थेंब भूमीवर पडले व त्या घर्मबिंदूतून एक विशालकाय, विराट व अत्यंत बलवान पुरुषाची उत्पत्ती झाली. देव व असुर दोघांनाही त्याला पाहुन आश्चर्य वाटले. मग ते त्याला घेऊन

ब्रम्हदेवाकडे गेले ब्रम्हदेवांने त्या विशालकाय पुरुषाला आपला मानसपुत्र माणून वास्तुपुरुषाचे नांव दिले व त्याला एका विशीष्ट प्रकारे (ईशान्येला शिर व नैऋत्येला पाय करुन) जमिनीवर अधोमुख झोपवले. (दुसऱ्या कथेनुसार देव व असुरांनी मिळून त्याला अधोमुख जमिनीवर पाडले) त्याच्या काही भागावर देवानी तर काही भागांवर असुरांनी वास केला. याचबरोबर ब्रम्हदेवाने त्या वास्तु पुरुषाला असा वरदान दिला की,.........

पुराणातील कथा वर्णन करताना यात दिलेली अनेक पात्रे ही प्रतिकात्मक (symbolic) असतात. त्यांचा शब्दश: अर्थ घ्यायचा नसतो. इथे अंधकासूर , (नांवातच सर्व काही आहे) अंधार म्हणजे अज्ञानाचे प्रतिक तर शिव म्हणजे परम ज्ञानाचे प्रतिक आहे. या दोघांचे द्वंद (युद्ध) म्हणजेच संघर्ष, इथे हेच सांगायचे आहे की, मानसाच्या मनातील ज्ञान व अज्ञान यांचा हा संघर्ष आहे. तो ही इतका की, घर्म (घाम) येईल, घाम तेंव्हाच येतो जेंव्हा प्रचंड मेहनत घेतली जाते. शेवटी शिवाचा विजय म्हणजे अज्ञानावर ज्ञानाचा विजय. त्यात आलेल्या घामाचा थेंब म्हणजेच विचारांच्या संघर्षातून आलेला निष्कर्ष म्हणजेच वास्तु पुरुष. ज्याला ब्रह्माने (ज्ञानाची प्राप्ती झालेला व्यक्ती) आपला मानस पुत्र मानला. आणि असा वरदान दिला की,........

जो कोणी घर, नगर, तलाव, मंदिर, प्रासाद, दुर्ग (किल्ला), शहर, पत्तन (व्यावसायीक नगर) बस्ती इ. चे निर्माण करते वेळी वास्तुपुरुषाला "ध्यानात" ठेऊन कार्य करेल, देवता त्याला सहाय्य करतील व जो कोणी वास्तु पुरुषाचा विचार न करता कार्य करेल, असूर (अ सूर म्हणजेच सूरात नसलेले, लयबद्ध नसलेले) ते कार्य नष्ट करतील, त्या कार्यात विघ्न आणतील. म्हणून वास्तु बनविताना वास्तु पुरुषाच्या अंगांचा, त्याच्या मर्म स्थानांचा विचार वास्तु तयार करण्यापूर्वीच करावा. तुझा विचार (पुजा) केल्याशिवाय वास्तुसंबंधीत कार्य पुर्ण मानले जाणार नाही. इथे हेच सांगितले आहे की, घर बनवण्यास सुरवात करण्यापूर्वीच त्याचे योग्य नियोजन केले पाहीजे.

संदर्भ - श्री मत्स्य पुराण

विश्वकर्मप्रकाश:

वास्तु सूत्र - २

याम्यादिष्वशुभफला जातास्तरव: प्रदक्षिणेनैते ।

उदगादिषु प्रशस्ता: प्लक्षवटोदुंबराश्वत्था: ॥

बृहत संहिता

- दक्षिण दिशासे प्रदक्षिणा क्रमसे प्लक्ष- बरगद- गूलर- पीपल के पेड़ अशुभ फलदायी होते है। और उत्तर दिशासे प्रदक्षिणा क्रमसे सुबह फलदायी होते है।

- दक्षिण दिशेकडून प्रदक्षिणा क्रमाने अनुक्रमे प्लक्ष-वड-औदुंबर-पिंपळ हे वृक्ष अशुभ असतात तर उत्तरेकडून प्रदक्षिणा क्रमाने अनुक्रमे शुभ असतात.

रमल विद्या परिचय
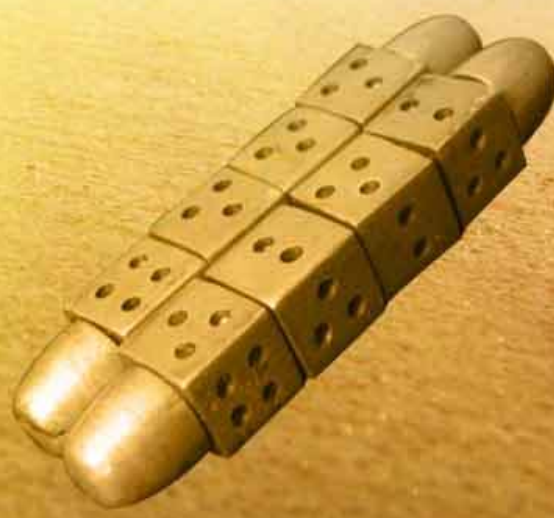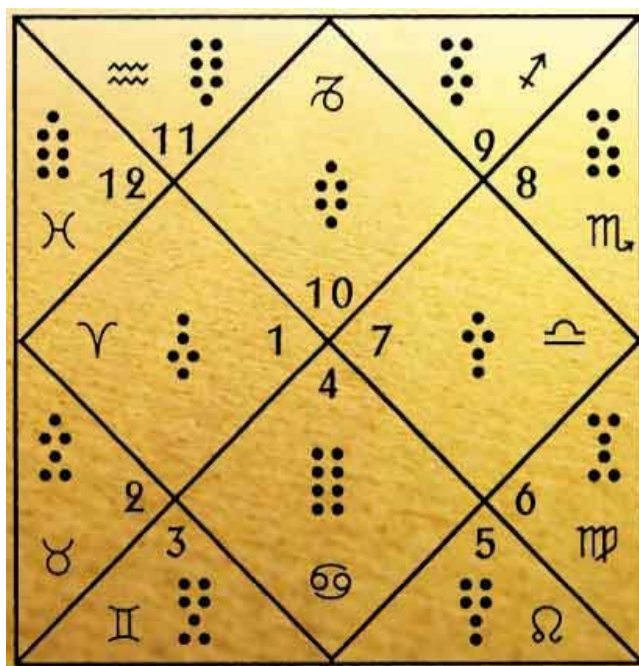
भविष्य कथन की विभिन्न पद्धतियों में से 'रमल' एक बहुत पुरातन पद्धति है। 'रमल' शास्त्र (पद्धति) प्रश्नों के उत्तर देने में और भविष्य कथन करने में पूर्णरूप से सक्षम है। रमल शब्द अरबी भाषा से संबंधित है, जिसका अर्थ है गोपनीय बात अथवा वस्तु को प्रकट करना। लेकिन व्याकरण अनुसार 'रमल' उस विद्या का नाम है जिससे भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान हो सकता है। 'रमल' अरबी भाषा में बालू अर्थात रेत को भी कहते हैं।

अन्य एक मतअनुसार पार्वती के द्वारा प्रश्न विद्या के ज्ञान के बारे में सवाल किए जाने पर भगवान शिव के मस्तक पर स्थिर चंद्रमा से अमृत की चार बूंदें गिरीं, जो क्रमशः अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी तत्त्व की प्रतीक थीं। इन्हीं बिंदुओं पर आधारित इस रमल ज्योतिष में सोलह शक्लों के रूपक बने, जो इस विद्या के आधार रूप हैं। वैसे भी शास्त्र द्वारा प्रमाणित होता है कि यह विद्या 'भारत' से ही अरब देशों में गई तथा वहां खूब प्रचलित हुई और भारत में विलुप्त सी हो गई, क्योंकि इसके आधार शास्त्र प्राचीन 'प्राकृत' भाषा में थे और बाद में अरबी और फारसी में लिखे गए। संस्कृत एवं हिंदी साहित्य में यह बहुत ही कम उपलब्ध है। कालांतर में यह विद्या, विलुप्त हो जाने के बाद, पुनः जब भारत में कुछ व्यक्तियों द्वारा लाई गई, तब यह विद्या पुनः प्रकाश में आई। लेकिन वर्तमान काल में यह पद्धति लुप्त सी हो रही है। फिर भी कुछ लोग हैं जो इस 'रमल' पद्धति के रहस्यों को भलीं भांति समझते हैं और उसे

प्रयोग में लाते हैं। ऐसे लोगों की संख्या गिनी-चुनी है। 'रमल' पद्धति पर बहुत कम पुस्तकें उपलब्ध हैं और जो है वह अधिकांश उर्दू और फारसी भाषा में है। इसी कारण से इस पद्धति के जानकार कम मिलते हैं।

रमल का पासा - रमल पद्धति में रमल कुंडली बनाने की सर्वश्रेष्ठ विधि पांसा द्वारा ही मानी गई है। यह पांसा सप्त धातु का बनाया जाता है यह 12 तोले से कम नहीं होना चाहिए। जिस दिन, दिन और रात बराबर हों अर्थात सायन मेष की संक्रांति हो उस दिन सोना, चांदी, लोहा, तांबा, जस्ता, सीसा और पारा को एक साथ गला कर चैपहले 8 पांसे बनाए जाते हैं। चार-चार पांसो के मध्य में आर-पार छेद कर एक कील या मोटी तार पर चारों को इस प्रकार पहना देते हैं कि वह कील के चारों ओर आसानी से घूम सके, इसी प्रकार शेष चार पांसों को भी कील पर पहना देते हैं। इस प्रकार 8 पांसे दो कीलों पर अलगअलग चार के ग्रुप में बन जाते हैं। हर चैपहले गुटिका पर निम्नलिखित रूप में खुदवाये जाते है प्रथम पटल पर 'रू', प्रथम पटल के ठीक नीचे वाले पटल पर 'रूरू', दूसरा पटल पर '∴', और दूसरे पटल के ठीक सामने।

जब प्रश्नकर्ता प्रश्न करता है तो उस समय पांसे डालकर उस पर अंकित रूपों को ध्यान से देखें। पांसो के प्रयोग में रूप (शक्ल) की गिनती दाहिने से बांये की होती है। हर रूप में चार तत्व अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी होते हैं। मान लें पांसे डालकर पांसे इस प्रकार पड़ें।

रमल पद्धति का मूल आधार सोलह रूप अर्थात् शक्लें और सोलह ही स्थान है। यह रूप (शक्लें) चार बिंदू (0) और रेखा (-) के अनेक क्रम परिवर्तन से उत्पन्न होते हैं।

रमल पद्धति में सोलह रूप और उनके नाम इस प्रकार है। 1. लह्यान, 2. कब्जुल दाख़िल , 3 कब्जुल ख़ारिज 4. जमात 5. फ़रहा, 6. उक़ला, 7 अंकीस 8. हुमरा, 9 बयाज, 10. नस्त्रुतुल ख़ारिज, 11. नस्त्रुतुल दाख़िल , 12. अतबतुल ख़ारिज 13. नकी 14. अतबतुल दाख़िल, 15. इज्जतमा, 16. तारीक । जिस क्रम में यह सोलह रूप रखे गये हैं इसे सकन पंक्ति कहते हैं। यह मूल पंक्ति है। और रमल कुंडली के स्थिर स्थानों के रूप भी यही है।

रमल पद्धति में तत्वों का महत्व - हर रूपों का संबंध चार तत्वों से है अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी। यह तत्व रूप के ऊपर से नीचे के क्रम में रहते हैं। सबसे ऊपर 'बिंदू' या 'रेखा' अग्नि तत्व उसके बाद वायु, जल और पृथ्वी तत्व होता है। उदाहरण: अग्नि वायु जल पृथ्वी। इन्हीं तत्वोंके आधार पर ही रूपों की शुभता और अशुभता का अंदाजा लगाया जाता है जो फल कथन में लाभकारी होता है। रूपके जिस तत्व पर 'बिन्दू' आता है वह तत्व खुला कहलाता है और जिस तत्व के स्थान पर 'रेखा' आती है वह तत्व बंद कहलाता है। इसी तरह जिस रूप में अग्नि तत्व खुला है और पृथ्वी तत्व बंद है खारिज रूप कहलाता है। यह रूप है। जिस रूप में अग्नि तत्व बंद हो और पृथ्वी तत्व खुला हो वह रूप दाखिल कहलाता है यह रूप होते हैं। जिस रूप में अग्नि और पृथ्वी तत्व खुले हों मुन्कलिव कहलाते हैं। यह रूप होते हैं। जिस रूप में अग्नि और पृथ्वी तत्व बंद होते हैं वो साबित कहलाते हैं।

- ज्योतिष जगत द्वारा संकलित

****

R&R
PREMIX FOOD PRODUCTS
INSTANT MIX
Eat Good Stay Good
So Fast,
So good!

विष्णूच्या २४ प्रतीमा (मुर्ती)

भारतीय शिल्पशास्त्रातील एक खासियत जी मला खूप आवडते ती म्हणजे भव्य-दिव्य गोष्टी करतांना लहान गोष्टींकडे दुर्लक्ष न करणे उलट लहान गोष्टींनाही तितकेच महत्व देणे. आपल्या भारतीय पुर्वाचार्यांनी अनेक मोठी भव्य मंदिरे बनविली. राजवाडे, मोठ्या इमारती, मोठमोठी शिल्पे साकारली तसेच त्यांनी सुक्ष्म कलाकुसरीही केल्या. मोठ्या गोष्टी करतांना लहान गोष्टींना 'चालवून घ्या' हे धोरन न ठेवता त्यांनाही तितकेच महत्व दिले. एखादी मुर्ती किंवा प्रतिमा बनवितांना त्यांनी अनेक गोष्टींवर खूपच बारकाईने लक्ष दिले आहे. प्रत्येक देवतेच्या मुर्तींचे प्रमाण ठरविले आहे. मुर्ती किती उंच असली कि, त्याचे मुख किती आकाराचे असावे, बाहु, पाय, डोळे इ. गोष्टींचे प्रमाण ठरलेले आहे. यावर अनेक ग्रंथ उपलब्ध आहेत. अशीच एक वाचनात आलेली रंजक माहीती आपल्यासमोर ठेवत आहे. विष्णूच्या मुर्तींचे २४ प्रकार सांगितले आहेत. विष्णूची चतुर्भूज मुर्ती बनवितांना ४ हातात ४ आयुधे येतात यांचा केवळ क्रम बदलून २४ प्रकारे या मुर्त्या बनविता येतात. या प्रत्येक मुर्तीला वेगळे नांव आहे.

विष्णुंच्या मुर्तींचे २४ प्रकार सांगितले आहेत. ते असे उजवा खालील (समोरचा) हात, उजवा वरचा (मागील) हात, डावा वरचा (मागील) हात, डावा खालील (समोरचा) हात याप्रमाणे क्रम समजावा. * अभयमुद्रेतील (आशिर्वाद देत असलेला) हाताथी कमळ असतेच, नसेल तर त्या हातात पद्म समजावे.

१) केशव	* शंख – चक्र – गदा – पद्म
२) विष्णु	* पद्म – शंख – चक्र – गदा
३) गोविंद	* गदा – पद्म – शंख – चक्र
४) वासुदेव	* चक्र – गदा – पद्म – शंख
५) दामोदर	* शंख – गदा – चक्र – पद्म
६) पुरुषोत्तम	* पद्म – शंख – गदा – चक्र
७) हृषिकेश	* चक्र – पद्म – शंख – गदा
८) उपेंद्र	* गदा – चक्र – पद्म – शंख
९) प्रद्युम्न	* शंख – गदा – पद्म – चक्र
१०) जनार्दन	* चक्र – शंख – गदा – पद्म
११) अच्युत	* पद्म – चक्र – शंख – गदा
१२) कृष्ण	* गदा – पद्म – चक्र – शंख
१३) मधुसुदन	* शंख – पद्म – गदा – चक्र
१४) माधव	* चक्र -शंख – पद्म – गदा
१५) त्रिविक्रम	* गदा – चक्र -शंख – पद्म
१६) नारायण	* पद्म – गदा – चक्र -शंख
१७) वामन	* शंख – चक्र – पद्म – गदा
१८) अधोक्षज	* गदा – शंख – चक्र – पद्म
१९) नारसिंह	* पद्म – गदा – शंख – चक्र
२०) हरि	* चक्र – पद्म – गदा – शंख
२१) संकर्षण	* शंख – पद्म – चक्र – गदा
२२) अनिरुद्ध	* गदा – शंख – पद्म – चक्र
२३) श्रीधर	* चक्र – गदा – शंख – पद्म
२४) पद्मनाभ	* पद्म – चक्र – गदा – शंख